

**छत्तीसगढ़ होमियोपैथी अधिनियम 2001**  
**THE CHHATTISGARH HOMOEOPATHY ADHINIYAM 2001**

Revised  
Act

**द्वि-भाषी संस्करण**  
**DIGLOT - EDITION**

-: प्रस्तुति :-

-: PRODUCED BY :-

**रजिस्ट्रार**

**छत्तीसगढ़ राज्य होमियोपैथी परिषद, रायपुर**

**REGISTRAR**

**THE CHHATTISGARH STATE HOMOEOPATHY PARISHAD, RAIPUR**



कार्यालय - रजिस्ट्रार, राज्य होमियोपैथी परिषद, आर.डी.ए. भवन,  
 तृतीयतल, शारदा चौक, रायपुर (छ.ग.),

फोन : 0771-6452461

OFFICE OF THE REGISTRAR STATE COUNCIL OF HOMOEOPATHY, R.D.A.  
 BUILDING, 3RD FLOOR, SHARAD CHOWK, RAIPUR (C.G.)  
 PHONE NO. 0771-6452461

**अधिनियम**  
**क्रमांक 19 सन् 1976**  
**छत्तीसगढ़ होमियोपैथी अधिनियम, 1976**  
**UNDER THE MDAHYA**  
**PRADESH REORGANIZATION**  
**ACT 2000**  
**U/S 79 ( NO28 OF 2000)**  
**UNDER THE CHHATTISGARH ADAPATTION**  
**ORDER, 2001**  
**THE CHHATTISGARH HOMOEOPATHY ADHINIYAM (1976)2001**  
**दी छत्तीसगढ़ एडाप्टेशन आदेश 2001**  
**दी छत्तीसगढ़ होमियोपैथी अधिनियम (1976) 2001**

**विषय - सूची**  
**TABLE OF CONTENTS**

धाराएं :  
 Sections :

**पहला अध्याय - प्रारंभिक**  
**CHAPER I - PRELIMINARY**

1. संक्षिप्त नाम तथा विस्तार  
Shrot title and extent.
2. परिभाषाएं  
Definitions.

**दूसरा अध्याय - राज्य होमियोपैथी परिषद् का गठन**

**CHAPTER II - CONSTITUTION OF STATE COUNCIL OF HOMOEOPATHY**

3. राज्य होमियोपैथी परिषद् का गठन  
Constiotution of State Council of Homoeopathy.
4. निर्वाचन का ढंग  
Mode of Election.
5. परिषद् की सदस्यता के लिये निरर्हतायें  
Disqualifications for membership of council.
6. परिषद् का निगमन  
Incorporation of Council.
7. परिषद् के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा सदस्यों की पदावधि  
Term of office of President, Vice-President and members of Council.
8. अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव  
No confidence motion against President and Vice-President.
9. कार्यकारिणी समिति तथा अन्य समितियां  
Executive Cmmittee and other committees.
10. अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष की शक्तियां एवं कर्त्तव्य  
Powers and duties of President and Vice-President.

तीसरा अध्याय - परिषद् तथा उसकी समितियों के कामकाज का संचालन

CHAPTER III- CONDUCT OF BUSINESS OF COUNCIL AND ITS COMMITTEES

11. परिषद् के सम्मिलन  
Meetings of Council .
12. गणपूर्ति  
Quorum
13. समितियों के सम्मिलन  
Meetings of Committees.
14. परिषद् तथा उसकी समितियों में होने वाली रिक्तियों से कार्यों आदि का अविधिवत् न होना  
Vacancies in the Council and Committees there\_of not to invalidate acts etc.
15. सदस्यों के लिये पारिश्रमिक का प्रतिषेध  
Prohibition of remuneration to members.

चौथा अध्याय - परिषद् निधि , बजट तथा संपरीक्षा

CHAPTER IV- COUNCIL FUND, BUDGET AND AUDIT

16. परिषद् निधि का गठन  
Constitution of Council Fund
17. लेखे तथा संपरीक्षा  
Accounts and Audit
18. बजट  
Budget.

पांचवा अध्याय - परिषद् का रजिस्ट्रार तथा उसके अन्य कर्मचारी

CHAPTER V - REGISTRAR AND OTHER EMPLOYEES OF THE COUNCIL

19. रजिस्ट्रार  
Registrar
20. परिषद् के अन्य कर्मचारी  
Other staff of council

छठवां अध्याय - रजिस्ट्रीकरण

CHAPTER VI -REGISTRATION

21. होमियोपैथी का राज्य रजिस्टर  
State Register of Homoeopathy
22. रजिस्ट्रीकरण के लिये हकदार व्यक्ति  
Persons entitled to be registered.
23. रजिस्टर में अतिरिक्त अर्हता की प्रविष्टि  
Entry of additional qualification in the Register.
24. धिकित्सीय व्यवसाय के लिये अस्थायी रजिस्ट्रीकरण  
Provisional registration for medical practice.
25. रजिस्टर से नाम का हटाया गया  
Removal of name from the register.
26. राज्य रजिस्टर में प्रविष्ट किये गये नामों का प्रकाशन  
Publication of names entered in the State register.

सातवां अध्याय - रजिस्ट्रीकृत व्यवसाइयों के विशेषाधिकार

## CHAPTER VII- PRIVILEGES OF REGISTERED PRACTITIONER

27. रजिस्ट्रीकृत व्यवसायी के विशेषाधिकार  
Privileges of Registered Practitioners.
28. इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत न किये गये व्यक्तियों द्वारा व्यवसाय आदि करने का प्रतिबंध  
Prohibition to practice etc; of persons not registered under this Act.
29. उपाधि या उपाधि -पत्र का मिथ्या ग्रहण अपराध होगा  
False assumption of degree or diploma to be an offence.
30. उपाधि, उपाधि-पत्र, आदि के अप्राधिकृत रूप से प्रदान किया जाने का प्रतिषेध  
Prohibition of unauthorised conferment of degree, diploma etc;
31. फीस का वापस न किया जाना  
Non-refund of fees .

आठवां अध्याय - होमियोपैथी की शिक्षा, परीक्षाओं का संचालन  
अध्ययन - पाठ्यक्रम तथा संस्थाओं की मान्यता

## CHAPTER VIII - EDUCATION IN HOMOEOPATHY, CONDUCT OF EXAMINATIONS COURSES OF STUDIES AND RECOGNITION OF INSTITUTION

32. परिषद् द्वारा ली जाने वाली परीक्षाएँ तथा अध्ययन - पाठ्यक्रम और होमियोपैथी में गवेषणा  
Examinations held by the Council and Courses of studies and research in homoeopathy.
33. संस्थाओं को मान्यता  
Recognition of Institutions
34. स्तर को बनाये रखना  
Maintenacne of standard
35. परिदर्शकों, निरीक्षकों तथा परिदर्शक समितियों की नियुक्ति  
Appointment of Visitors, Inspectors and Visiting Committees.
36. मान्यता का प्रत्याहरण  
Withdrawal of recognition
37. छात्रवृत्ति, वृत्तिकारं तथा पारितोषिक  
Scholarships, stipends and prizes.
38. दीक्षान्त -समारोह का किया जाना, सम्मानिक उपाधियों का प्रदान किया जाना  
Holding convocation, conferring of Honorary degrees
39. पाठ्य -पुस्तकों आदि का प्रकाशन  
Publication of text books etc.

नवां अध्याय - नियंत्रण

## CHAPTER IX- CONTROL

40. राज्य सरकार का नियंत्रण  
Control of State Government
41. अध्यक्ष या उपाध्यक्ष जानकारी प्रस्तुत करेंगे  
President and Vice-President to submit information.
42. परिषद् के आदेश आदि के निष्पादन को निलंबित करने की शक्ति

Power to suspend execution of order etc; of Council

दसवां अध्याय - प्रकीर्ण

**CHAPTER X- MISCELLANEOUS**

43. दस्तावेज पेश करने के लिये परिषद् के सेवकों को समन करने पर निर्बन्धन  
Restriction on summons of a Council servants to produce documents.
44. इस अधिनियम के अधीन कार्य करने वाले व्यक्तियों का परित्राण  
Indemnity of persons acting under the Act.
45. परिषद् का रजिस्ट्रार तथा अन्य सेवक लोक सेवक होंगे  
Registrar and other servants of the Council to be public servants.
46. अपराधों का संज्ञान  
Cognizance of offences.
47. असेसर की नियुक्ति  
Appointment of Assessor.
48. अपीलें  
Appeals.
49. अनुसूची को संशोधित करने की शक्ति  
Power to amend schedule
50. शास्ति  
Penalty

ग्यारहवां अध्याय - नियम तथा विनियम

**CHAPTER XI - RULES AND REGULATIONS**

51. नियम बनाने की शक्ति  
Power to make rules.
52. विनियम बनाने की शक्ति  
Power to make regulations

बारहवां अध्याय - व्यावृत्ति

**CHAPTER XII- SAVING**

53. व्यावृत्ति  
Saving

तेरहवां अध्याय - अस्थायी उपबंध

**CHAPTER XIII - TRANSITORY PROVISIONS**

54. अस्थायी उपबंध  
Transitory Provison.
55. कठिनाइयों को दूर करने की शक्ति  
Powr to remove difficulties
56. निरसन  
Repead (Repeal)  
अनुसूची

छत्तीसगढ़ अधिनियम  
(क्रमांक 19 सन् 1976)  
छत्तीसगढ़ होमियोपैथी अधिनियम  
2001

CHHATTISGARH ACT  
NO. 19 OF (1976)  
THE CHHATTISGARH HOMOEOPATHY  
ADHINIYAM 2001

(दिनांक 15 मार्च 1976 को राष्ट्रपति की अनुमति प्राप्त हुई, अनुमति म.प्र. राजपत्र (असाधारण) में दिनांक 15 मार्च 1976 को प्रथमवार प्रकाशित की गई थी, छत्तीसगढ़ राजपत्र में प्रकाशन दिनांक .....)

[Received the assent of the President on the 15th March 1976 assent first Published in the "Madhya Pradesh Gazette" (Extraordinary) dated the 15th March 1976.]

राज्य होमियोपैथी परिषद् के गठन के लिये उपबन्ध करने तथा राज्य में होमियोपैथी के व्यवसायियों का रजिस्ट्रीकरण विनियमित करने के लिये एवं उससे संबंधित विषयों के लिये उपबन्ध करने हेतु अधिनियम ।

An Act to provide for the constitution of a State Council of Homoeopathy and to regulate the registration of practitioners of Homoeopathy in the State and for matters connected therewith adopted by Chhattisgarh adoption order 2001.

भारत गणराज्य के इनक्यावन वर्ष में छत्तीसगढ़ विधान मंडल द्वारा निम्नलिखित रूप में यह अधिनियमित हो :

Be it enacted by the Chhattisgarh Legislature in the Year of the Republic of India as follows :-

**पहला अध्याय -प्रारंभिक  
संक्षिप्त नाम तथा विस्तार**

**CHAPTER -I- PRELIMINARY**

**Short title and extent**

1. (1) इस अधिनियम का संक्षिप्त नाम छत्तीसगढ़ होमियोपैथी परिषद् अधिनियम, 2001 है।
- (2) इसका विस्तार संपूर्ण छत्तीसगढ़ पर है।

- 1.i. This Act may be called the Chhattisgarh Homoeopathy Adhiniyam 2001.
- ii. It extends to the whole of Chhattisgarh .

**परिभाषाये**

**Definitions**

2. इस अधिनियम में, जब तक कि संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो,

2. In this Act unless the context otherwise requires -

(क) "अनुमोदित संस्था " से अभिप्रेत है चिकित्सालय, स्वास्थ्य -केन्द्र या ऐसी अन्य संस्था जिसमें कोई व्यक्ति, उसे होमियोपैथी में चिकित्सीय अर्हता प्रदान की जाने के पूर्व अपने अध्ययन -पाठ्यक्रम द्वारा अपेक्षित प्रशिक्षण, यदि कोई हो, प्राप्त कर सके।

- (a) "approved institution" means a hospital, health center or such other institution in which a person may undergo training, if any, required by this course of study before the award of any medical qualification in Homoeopathy.

(ख) "परिषद्" से अभिप्रेत है, धारा 3 के अधीन गठित राज्य होमियोपैथी परिषद्।

- (b) "Council" means the State Council of Homoeopathy constituted under section 3.

(ग) "सूची बद्ध व्यवसायी" से अभिप्रेत है, होमियोपैथी का ऐसा व्यवसायी, जिसका नाम निरसित एक्ट के अधीन बनाये रखी गई सूची में प्रविष्ट है।

- (c) "enlisted practitioner" means a practitioner in Homoeopathy whose name is entered in the list maintained under the repealed Act.

(घ) "होमियोपैथी" से अभिप्रेत है डाक्टर एस.हेनीमेन द्वारा प्रतिष्ठापित चिकित्सा पद्धति और उसके अन्तर्गत आती है। डाक्टर शुचलर की बायोकेमिक उपचार पद्धति, चाहे ऐसी आधुनिक प्रगतियों द्वारा, जैसी के परिषद समय -समय पर अवधारित करे, उसकी अनुपूर्ति की गई हो या न की गई हो, और अभिव्यक्ति "होमियोपैथी" का अर्थ, तदनुसार लगाया जायेगा।

- (d) "Homoeopathy" means the system of medicine founded by Dr. S. Hahnemann and includes Dr. Suchsler's system of Biochemic remedies whether supplemented or not by such modern advances as the Council may, from time to time, determine and the expression "Homoeopathic" shall be construed accordingly ;

- (ड) "चिकित्सकीय संस्था" से अभिप्रेत है राज्य के भीतर या बाहर स्थित कोई ऐसी संस्था, जो होमियोपैथी में उपाधियां, उपाधि-पत्र या अनुज्ञप्तियां प्रदान करती हो।
- (च) "मान्यता प्राप्त संस्था" से अभिप्रेत है, धारा 33 के अधीन मान्यता प्राप्त संस्था।
- (छ) "मान्य अर्हता" से अभिप्रेत है, अनुसूची में सम्मिलित की गयी होमियोपैथी अर्हताओं में से कोई भी चिकित्सीय अर्हता।
- (ज) "रजिस्टर" से अभिप्रेत है, धारा 21 के अधीन रखा गया रजिस्टर।
- (झ) "रजिस्ट्रीकृत व्यवसायी" से अभिप्रेत है ऐसा व्यक्ति जिसका नाम रजिस्टर में तत्समय प्रविष्ट हो।
- (ञ) "विनियम" से अभिप्रेत है धारा 52 के अधीन बनाया गया विनियम।
- (ट) "निरसित एक्ट" से अभिप्रेत है, छत्तीसगढ़ होमियोपैथी एण्ड बायोकेमिक प्रैक्टिशनर्स एक्ट, 1951 (क्रमांक 26 सन् 1951)
- (ठ) "विश्वविद्यालय" से अभिप्रेत है भारत में स्थित कोई भी विश्वविद्यालय जो विधि द्वारा स्थापित किया गया हो तथा जिसमें होमियोपैथी का संकाय हो और उसके अंतर्गत आता है, भारत में विधि द्वारा स्थापित किया गया ऐसा विश्वविद्यालय जिसमें होमियोपैथी में शिक्षण, अध्यापन, प्रशिक्षण या गवेषणा के लिये प्रबंध किया गया हो।

### दूसरा अध्याय - राज्य होमियोपैथी परिषद् का गठन

#### राज्य होमियोपैथी परिषद् का गठन

3. (1) राज्य सरकार अधिसूचना द्वारा, इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिये एक राज्य होमियोपैथी परिषद् का गठन करेगी, जिसमें निम्नलिखित सदस्य होंगे, अर्थात् -
- (क) राज्य के प्रत्येक राजस्व आयुक्त संभाग का, प्रतिनिधित्व करने वाला एक सदस्य, जो उस संभाग में होमियोपैथी के व्यवसायी के रूप में रजिस्टर में दर्ज किये गये, व्यक्तियों द्वारा अपने में से निर्वाचित किया जायेगा।
- (ख) एक सदस्य जो निम्नलिखित में से, प्रत्येक में से, राज्य सरकार द्वारा नाम निर्देशित किया जायेगा -
- (एक) राज्य के मान्यता प्राप्त होमियोपैथी महाविद्यालयों के प्राचार्य

- (e) "medical institution" means any institution within or without the State which grant degrees, diplomas or licences in Homoeopathy;
- (f) "recognised institution" means an institution recognised under section 33.
- (g) "recognised qualification" means any of the medical qualifications in Homoeopathy included in the schedule.
- (h) "Register" means the register maintained under section 21.
- (i) "registered practitioner" means a person whose name is for the time being entered on the register;
- (j) "regulation" means a regulation made under section 52.
- (k) "Repealed Act" means the Madhya Pradesh Homoeopathic and Biochaemic Practitioners Act 1951 (N26 of 1951)
- (l) "University" means any University in India established by Law and having a faculty of Homoeopathy and includes a University in India established by law in which instruction, teaching, training or research in Homoeopathy is provided.

### CHAPTER -II- CONSTITUTION OF STATE COUNCIL OF HOMOEOPATHY

#### Constitution of State Council of Homoeopathy

- 3.(1) The State Government shall, by notification constitute for the purposes of this Act a State Council of Homoeopathy following members, namely :-
- (a) One member representing each of the Revenue Commissioner's division in the State, to be elected from amongst themselves by persons enrolled on the register as practitioner in Homoeopathy in that division;
- (b) One member to be nominated by the State Government from each of the following -
- (i) Principals of recognised Homoeopathic Colleges in the State;

(दो) राज्य के मान्यता प्राप्त होमियोपैथी महाविद्यालयों के अध्यापक,

(तीन) राज्य चिकित्सीय सेवा के, वे सदस्य, जो होमियोपैथी का व्यवसाय करते हों।

(ग) पांच सदस्य, राज्य सरकार द्वारा नाम निर्देशित किये जायेंगे अर्थात् दो सदस्य उन व्यक्तियों में से होंगे, जिन्हें होमियोपैथी के बारे में विशेष ज्ञान या व्यावहारिक अनुभव हो तथा तीन सदस्य, उन व्यक्तियों में से होंगे जिन्हें अन्य संबद्ध चिकित्सीय पद्धतियों (रिलेटेड मेडिकल डिसिप्लिन) में विशेष ज्ञान या व्यावहारिक अनुभव हो,

(घ) विश्वविद्यालय की कार्यकारिणी परिषद् का एक सदस्य, जो राज्य सरकार द्वारा नाम निर्देशित किया जायेगा।

(ङ) उपसंचालक, होमियोपैथी, छत्तीसगढ़

परन्तु परिषद् के प्रथम गठन के लिये, खण्ड

(क) के अधीन सदस्य राज्य सरकार द्वारा उन व्यक्तियों में से नाम निर्देशित किये जायेंगे, जो कि उस रूप में निर्वाचित किये जाने के लिये, उक्त खंड (क) के अधीन अर्हित हों:

परन्तु यह और भी यदि प्रथम परिषद् किसी कारण से, इस अधिनियम के प्रारंभ होने की तारीख को गठित न हो पाये या उसे अस्तित्व में नहीं लाया जा सकता हो, तो राज्य सरकार, छः माह से अनधिक कालावधि के लिये किसी व्यक्ति को परिषद् के भार साधक अधिकारी के रूप में नियुक्त कर सकेगी और इस प्रकार नियुक्त किया गया, भारसाधक अधिकारी, राज्य सरकार के नियंत्रण के अधीन रहते हुए, इस अधिनियम के अधीन परिषद् की समस्त शक्तियों का प्रयोग करेगा तथा उसके समस्त कर्तव्यों का पालन करेगा और वह अपनी सेवाओं के लिये ऐसा वेतन तथा भत्ते, जो कि राज्य सरकार द्वारा नियत किये जायें, परिषद् निधि से प्राप्त करेगा :

परन्तु यह भी, कि यदि परिषद् पूर्वोक्त कालावधि का अवसान होने के पूर्व गठित हो जाये, तो भारसाधक अधिकारी, नवीन रूप से गठित परिषद् के प्रथम साधारण सम्मिलन के लिये नियम की गई, तारीख से अपने पद पर नहीं रहेगा।

(2) परिषद् के अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष, परिषद् के सदस्यों द्वारा अपने में, से ऐसी रीति में निर्वाचित किये जायेंगे जैसी कि विहित की जाय:

(ii) Teachers of recognised Homoeopathy College in the State ;

(iii) Members of State Medical Service Practising Homoeopathy ;

(c) Five members to be nominated by the State Government that is two from amongst persons having special knowledge or practical experience in respect of Homoeopathy and three from other related medical disciplines;

(d) One member of the Executive Council of a University to be nominated by the State Government;

(e) Deputy Director of Homoeopathy, Chhattisgarh . Provided that in the first constitution of the Council the members under clause (a) shall be nominated by the State Government from amongst the persons qualified to be elected as such under the said clause (a);

Provided further that if for any reason the first council is not constituted or cannot be brought into being on the date of commencement of this Act the State Government may appoint a person to be the Officer -in-charge of the Council for a period not exceeding six months, and the officer -in-charge so appointed shall, subject to the control of the State Government exercise all the powers and perform all the duties of the council under this Act, and he shall receive from the council fund for his service such pay and allowance as may be fixed by the State Government,

Provided also that if the Council is constituted before the expiry of the period aforesaid, the officer -in-charge shall cease to hold the office on the date appointed for the first ordinary meeting of the newly constituted council.

(2) The President and Vice President of the Council shall be elected by the members of the Council from amongst themselves in such manner as may be prescribed ;



परन्तु परिषद् के प्रथम गठन के लिये, अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष का नाम निर्देशन, राज्य सरकार द्वारा, प्रथम परिषद् के सदस्यों में से किया जायेगा।

### निर्वाचन का ढंग

4. (1) धारा 3 की उप धारा (1) के खण्ड (क) के अधीन निर्वाचन का संचालन राज्य सरकार द्वारा, इस प्रयोजन के लिये नियुक्त किये गये, अधिकारी द्वारा, ऐसे नियमों के अनुसार किया जायेगा जो कि इस संबंध में राज्य सरकार द्वारा बनाये जाये।
- (2) जहां परिषद् के लिये, किसी निर्वाचन के संबंध में कोई विवाद उद्भूत हो, वहां वह राज्य सरकार को, निर्देशित किया जायेगा, जिसका उस पर विनिश्चय अंतिम होगा।

### परिषद् की सदस्यता के लिए निरर्हताएं

5. (1) कोई भी व्यक्ति परिषद् के सदस्य के रूप में चुने जाने तथा उसके सदस्य होने के लिये निरर्हित होगा :-
  - (क) यदि वह न्यायालय द्वारा, किसी ऐसे अपराध के लिये, सिद्धदो ठहराया गया हो, जिसमें कि नैतिक अधमता अन्तर्वलित है।
  - (ख) यदि वह विकृत चित्त का हो तथा सक्षम न्यायालय द्वारा, इस रूप में घोषित कर दिया गया हो।
  - (ग) यदि वह अनुन्मोचित दिवालिया हो।
  - (घ) यदि वह परिषद् का, पूर्णकालिक कर्मचारी हो,
  - (ङ) यदि उसकी आयु 25 वर्ष से कम हो,
  - (च) यदि वह परिषद्, केन्द्रीय सरकार, राज्य सरकार या किसी स्थानीय प्राधिकारी का पदच्युत कर्मचारी हो,
  - (छ) यदि वह परिषद् के साथ, परिषद् द्वारा या परिषद् की ओर से की गई किसी संविदा में प्रत्यक्षतः या अप्रत्यक्षतः कोई अंश या हित रखता हो।
- (2) कोई भी व्यक्ति, किसी भी समय सदस्य के रूप में एकसे अधिक हैसियत में सेवा नहीं कर सकेगा।
- (3) धारा 3 की उपधारा (1) के खण्ड (ख) में विनिर्दिष्ट प्रवर्गों में से, किसी भी प्रवर्ग के अंतर्गत आने वाला कोई भी व्यक्ति, उक्त धारा की उपधारा (1) के खण्ड (क) के अधीन निर्वाचित किये जाने के लिये पात्र नहीं होगा।

Provided that in the first constitution of the Council the President and the Vice-President shall be nominated by the State Government from amongst the members of the first Council.

### Mode of Election

- 4.(1) An election under clause (a) sub-section (1) mode of section 3 shall be conducted by an officer appointed by the State Government for the purpose in accordance with such rules as may be made by the State Government in this behalf.
- (2) Where any dispute arise regarding any election to the Council, it shall be referred to the State Government whose decision thereon shall be final.

### Desqualifications of membership of Council

- 5.(1) A person shall be disqualified for disqualification for membership of Council being chosen as and for being a member of the Council -
  - (a) if he has been convicted by a court for an offence involving moral turpitude;
  - (b) if he is of an unsound mind and stands so declared by a competent court;
  - (c) if he is an undischarged insolvent;
  - (d) if he is a full time employee of the Council;
  - (e) if his age is less than twenty five years;
  - (f) if he is a dismissed employee of the Council Central Government, State Government or any local authority;
  - (g) if he has any share or interest in any contract with, by or on behalf of, the Council directly or indirectly.
- (2) No person may at any time serve as a member in more than one capacity.
- (3) No person falling under any of the categories specified in clause (b) of sub-section (1) of section 3 shall be eligible to be elected under clause (a) of sub-section (1) of the said section.

**परिषद् का निगमन**

- 6. परिषद्, राज्य होमियोपैथी परिषद्, छत्तीसगढ़ के नाम से एक निगमित निकाय होगी, उसका शास्वत उत्तराधिकार होगा तथा उसकी एक सामान्य मुद्रा होगी और उसे जंगम तथा स्थावर दोनों प्रकार की सम्पत्ति अर्जित करने, धारण करने तथा उसका व्ययन करने और संविदा करने की शक्ति प्राप्त होगी और वह उक्त नाम से वाद चलायेगी तथा उक्त नाम से उसके विरुद्ध वाद चलाया जायेगा।

**परिषद् के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा सदस्यों की पदावधि**

- 7. (1) परिषद् का अध्यक्ष, उपाध्यक्ष या सदस्य यथास्थिति अपने निर्वाचन या नाम निर्देशन की तारीख से, पांच वर्ष की अवधि तक या उसके उत्तराधिकारी का सम्यक् रूप से निर्वाचन या नाम-निर्देशन होने तक, इनमें से जो भी अवधि दीर्घतर हो, पद धारण करेगा।
- (2) कोई भी व्यक्ति, जो परिषद् के अध्यक्ष या उपाध्यक्ष या सदस्य यथास्थिति अपने निर्वाचन या नाम-निर्देशन होने तक, इनमें से जो भी अवधि दीर्घतर हो, पद धारण करेगा।
- (3) परिषद् के सदस्य पुनः निर्वाचित किये जाने या पुनः नामनिर्देशन के लिये पत्र होंगे।
- (4) किसी भी निर्वाचित या नामनिर्दिष्ट सदस्य के संबंध में यह समझा जायेगा कि उसने अपना स्थान रिक्त कर दिया है -
  - (क) यदि वह परिषद् के तीन लगातार साधारण सम्मिलनों से ऐसे प्रति हेतु के बिना अनुपस्थित रहे जो कि परिषद् की राय में पर्याप्त हों,
 

या
  - (ख) यदि वह धारा 5 की उपधारा (1) में विनिर्दिष्ट की गई निरर्हताओं में से, किसी भी निरर्हता का भागी हो जाये,
 

या
  - (ग) धारा 3 की उपधारा (1) के खंड (क) के अधीन निर्वाचित किये गये सदस्य के मामले में, यदि वह रजिस्टर में नामांकित न रह जाय,
 

या
  - (घ) धारा 3 की उपधारा (1) के खण्ड (ख) या खण्ड (घ) के अधीन नामनिर्दिष्ट सदस्य के मामले में, यदि वह उस पद पर न रहे जिसके कि आधार पर उसका इस प्रकार नाम-निर्देशन किया गया हो,

**Incorporation of Council**

- 6. The Council shall be a body corporate by the name of the State Council of Homoeopathy, Incorporation of Council, Chhattisgarh, having perpetual succession and a common seal, with power to acquire, hold and dispose of property both movable and immovable and to contract, and shall by the said name sue and be sued.

**Term of Office of President, Vice-President and members of Council**

- 7.(1) The President, Vice President or a member of the Council shall hold office for a term of five years from the date of his election or nomination, as the case may be, or until his successor shall have been duly elected or nominated, whichever is longer.
- (2) A person who holds the office of President or Vice-President of the Council for two consecutive periods shall not be eligible for re-election to that office.
- (3) Members of the Council shall be eligible for re-election or re-nomination.
- (4) An elected or nominated member shall be deemed to have vacated his seat -
  - a. if he is absent without excuse, sufficient in the opinion of the Council, from three consecutive ordinary meetings of the Council,
 

Or
  - b. If he becomes subject to any of the disqualifications specified in sub-section (1) of section 5;
 

Or
  - c. in the case of a member elected under clause (1) of sub-section (1) or section 3, if he ceases to be enrolled on the Register;
 

Or
  - d. in the case of a member nominated under clause (b), or clause (d) of sub-section (1) of section 3, if he ceases to hold the office by virtue of which he has been so nominated;

और तदुपरान्त परिषद् उसका स्थान रिक्त घोषित करेगी :

परन्तु परिषद् किसी स्थान को तब तक रिक्त घोषित नहीं करेगी जब तक कि संबंधित सदस्य को सुनवाई का युक्तियुक्त अवसर न दे दिया गया हो।

(5) परिषद् में होने वाला आकस्मिक रिक्ति, यथास्थिति निर्वाचन या नामनिर्देशन द्वारा भरी जायेगी, और उस रिक्ति को भरने के लिए, निर्वाचित किया गया या नामनिर्देशित किया गया व्यक्ति, केवल उस अवधि के शेष काल के लिये पद धारण करेगा जिसके लिये कि वह सदस्य, जिसका कि स्थान वह लेता हो, निर्वाचित या नामनिर्देशित किया गया था।

(6) जहां किसी सदस्य के बारे में पांच वर्ष की उक्त अवधि का अवसान होने को है, वहां उक्त अवधि का अवसान होने के पूर्व तीन मास के भीतर, किसी भी समय उत्तराधिकारी का निर्वाचन या नाम निर्देशन किया जा सकेगा, किन्तु वह उत्तराधिकारी, तब तक पद ग्रहण नहीं करेगा जब तक कि उक्त अवधि का अवसान न हो जाय।

#### अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव

8. (1) अध्यक्ष, उपाध्यक्ष को उसके पद को ऐसे बहुमत से, जो परिषद् के उपस्थित तथा मतदान करने वाले सदस्यों के दो तिहाई से कम न हो और ऐसा बहुमत, तत्समय परिषद् का गठन करने वाले सदस्यों की कुल संख्या के आधे से अधिक हो, परिषद् द्वारा पारित किये गये, संकल्प द्वारा हटाया जा सकेगा :

परन्तु इस प्रयोजन के लिये, कोई संकल्प तब तक प्रस्तुत नहीं किया जायेगा जब तक कि ऐसा संकल्प प्रस्तुत करने के आशय की कम से कम चौदह दिन की सूचना न दी गई हो।

(2) अध्यक्ष या उपाध्यक्ष, जिसके विरुद्ध उपधारा (1) के अधीन प्रस्ताव पारित किया गया हो, पद धारण करने से तत्काल परिवर्तित हो जायेगा और अध्यक्ष के हटा दिये जाने की दशा में उपाध्यक्ष, उस समय तक, अध्यक्ष के कृत्यों का निर्वहन करेगा जब, तक कि उसका उत्तराधिकारी निर्वाचित न हो जाये।

(3) इस अधिनियम या उसके अधीन बनाये गये नियमों तथा विनियमों में अन्तर्विष्ट किसी बात के होते हुए

and the Council shall thereupon declare his to be vacant; provided that the Council shall not declare any seat to be vacant unless member concerned has been given a reasonable opportunity of being heard.

5. A casual vacancy in the Council shall be filled by election or nomination, as the case may be and the person elected or nominated to fill the vacancy shall hold office only for the remainder of the term for which the member whose place he takes was elected or nominated.

6. Where the said term of five years is about to expire in respect of any member, a successor may be elected or nominated at any time within three months before the said term expires but he shall not assume office until the said term has expired.

#### No condidence motion against President and Vice - President

8. (1) The president or the Vice President may be removed from his office by a resolution passed by the Council by a majority of not less than two thirds of the members of the Council present and voting and such majority is more than one half of the total membership constituting the Council for the time being :

Provided that no resolution for the purpose shall be moved unless at least fourteen days notice of intention to move the resolution has been given.

(2) The president or the Vice-President against whom a motion is passed under sub-section (1) shall, forthwith cease to hold office and in the event of removal of the president, the Vice-President shall discharge the functions of the president till his successor is elected.

(3) Notwithstanding anything contained in this Act or the rules and regulations made thereunder, the Director of Health Services

भी, अध्यक्ष या उपाध्यक्ष, उस सम्मिलन की अध्यक्षता नहीं करेगा, जिसमें कि उसके विरुद्ध अविश्वास के प्रस्ताव पर चर्चा की जानी हो, ऐसे सम्मिलन की अध्यक्षता संचालक, स्वास्थ्य सेवारं, छत्तीसगढ़ द्वारा या उसके इस प्रयोजनार्थ नियुक्त किये गये, अधिकारी द्वारा की जायेगी। तथापित, यथास्थिति अध्यक्ष या उपाध्यक्ष को सम्मिलन की कार्यवाहियों में बोलने तथा अन्यथा भाग लेने का अधिकार प्राप्त होगा।

Chhattisgarh or by an officer [meeting in which & motion of no confidence is discussed against him. Such meeting shall be presided over by Director of Health Servie, Chharrisgarh or by an officer ] appointed by him for the purpose. However, the President or the Vice -President, as the case may be, shall have a right to speak and otherwise to take part in proseedings of the meeting.

- (4) इस धारा के प्रयोजनों के लिये सम्मिलन विहित रीति में किया जाय।

- (4) A Meeting for the purposes of this section shall be held in the manner prescribied.

**कार्यकारिणी समिति तथा अन्य समितियाँ**

**Executive Committee and other Committees**

- 9. (1) परिषद् अपने सदस्यों में से एक कार्यकारिणी समिति का तथा साधारण या विशेष प्रयोजनों के लिये ऐसी अन्य समितियों का गठन करेगी, जिन्हें कि परिषद् इस अधिनियम के प्रयोजन को कार्यान्वित करने के लिये आवश्यक समझे।

- 9. (1) The Council shall constitute from amongst its members an Executive Committee and (Executive Committee and other committees ) such other Committees for general or special purposes as the Council may deem necessary to carry out the purposes of this Act.

- (2) कार्यकारिणी समिति अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष से जो पदेन सदस्य होंगे तथा ऐसे अन्य पांच सदस्यों से मिलकर बनेगी जो परिषद् द्वारा अपने सदस्यों में से निर्वाचित किये जायेंगे, जिनमें से कम से कम तीन सदस्य परिषद् के नामनिर्देशित सदस्यों में से होंगे।

- (2) The Executive Committee shall consist of the President and the Vice -President President, who shall be [members ex-office and five other member who should be ] elected by the Council from amongst its member of whom at least three shall be from amongst the nominated members of the Council.

- (3) अध्यक्ष या उपाध्यक्ष कार्यकारिणी समिति के क्रमशः अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष होंगे।

- (3) The President and the Vice-President shall be the President and Vice - Pressident respectively of the Executive Committee,

- (4) कार्यकारिणी समिति, इस अधिनियम द्वारा उसे प्रदत्त शक्तियों तथा इस अधिनियम द्वारा उस पर अधिरोपित किये गये कर्त्तव्यों के अतिरिक्त ऐसी शक्तियों का प्रयोग तथा ऐसे कर्त्तव्यों का पालन करेगी, जिन्हें कि परिषद्, किन्ही ऐसे विनियमों द्वारा, जो कि इस संबंध में बनाये जाये, उसे प्रदत्त करे या उस पर अधिरोपित करे।

- (4) In addition to the powers and duties conferred and imposed upon it by this Act, the Executive Committee shall exercise and discharge such power and duties as the Council may confer of ...[].....impose upon it by any regulations which may be made in this behalf.

(5) उपधारा -

- (5) A Committee constituted under sub-section

- (1) के अधीन गठित समिति, इस अधिनियम द्वारा या उसके अधीन उसे प्रदत्त की गई शक्तियों का प्रयोग करने या इस अधिनियम द्वारा या उसके अधीन उस पर अधिरोपित किये गये कर्त्तव्यों और कृत्यों का निर्वहन करने में, परिषद् के नियंत्रणाधीन होगी और परिषद् ऐसी समिति द्वारा पारित किये गये किसी आदेश को या उसके द्वारा किये गये किसी विनिश्चय को पुनरीक्षित करने या उसे विखण्डित करने के लिये सक्षम होगी।

- (1) shall be under the control of the Council in exercise or discharge of any powers, duties and functions, conferred or impose upon it by or under this Act and the Council shall be competent to revise or rescind any order or decision passed or taken by any such committee.

अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष की शक्तियां  
एवं कर्त्तव्य

10. (1) अध्यक्ष को, परिषद् तथा कार्यकारिणी समिति के सम्मिलन बुलाने की शक्ति प्राप्त होगी, वह परिषद्, कार्यकारिणी समिति तथा ऐसी अन्य समितियों के सम्मिलनों को, जिनका कि वह सदस्य हो, अध्यक्षता करेगा।
- (2) अध्यक्ष का यह कर्त्तव्य होगा कि वह इस बात को सुनिश्चित करें कि इस अधिनियम तथा उसके अधीन बनाये गये नियमों तथा विनियमों का निष्ठापूर्वक अनुपालन किया जाता है और उसे, कार्यकारिणी समिति के नियंत्रण के अधीन रहते हुए, इस प्रयोजन के लिये आवश्यक शक्तियां प्राप्त होंगी।
- (3) अध्यक्ष, परिषद् के कार्यकलापों पर सामान्य नियंत्रण रखेगा और परिषद् कार्यकारिणी समिति तथा अन्य समितियों के विनिश्चयों को कार्यान्वित करेगा।
- (4) अध्यक्ष ऐसी अन्य शक्तियों का प्रयोग करेगा जो कि परिषद् द्वारा उसे प्रदत्त की जाये।
- (5) अध्यक्ष, उपाध्यक्ष को इस बात के लिये सशक्त कर सकेगा कि वह उसके (अध्यक्ष के) नियंत्रण के अधीन रहते हुए, अध्यक्ष की शक्तियों, कर्त्तव्यों या कृत्यों में से किसी एक या एक से अधिक शक्तियों का प्रयोग करें, अध्यक्ष के एक या एकसे अधिक कर्त्तव्यों का पालन करे या उसके एक या एक से अधिक कृत्यों का निर्वहन करें।

(6) उपाध्यक्ष -

- (क) अध्यक्ष की अनुपस्थिति में अध्यक्ष की शक्तियों का प्रयोग तथा उसके कृत्यों का पालन करेगा और
- (ख) अवसर आने पर किसी भी समय, अध्यक्ष द्वारा उपधारा (5) के अधीन उसे प्रत्यायोजित किये गये किसी भी कर्त्तव्य का पालन तथा प्रत्यायोजित की गई किसी भी शक्ति का प्रयोग करेगा।

तीसरा अध्याय - परिषद् तथा उसकी समितियों के काम काज का संचालन

परिषद् के सम्मिलन

11. परिषद् अपने सम्मिलन करेगी और समय-समय पर अपने सम्मिलन के स्थान, दिन, समय, प्रबंध तथा

Powers and duties of President and  
Vice - President

- 10.(i) The President shall have power to convene the meetings of the Council and the Executive Committee. He shall preside at the meetings of the Council, Executive Committee and at such other Committee of which he is member.
- (2) It shall be the duty of the President to ensure that this Act and the rules and regulations made thereunder are faithfully observed and he shall have, subject to the control of the Executive Committee, the powers necessary for this purpose.
- (3) The President shall exercise general control over the affairs of the council and shall give effect to the decisions of the Council, Executive Committee and other committees.
- (4) The President shall exercise such other powers as may be conferred on him by the council.
- (5) The President shall empower the Vice-President to exercise under his control any one or more of his powers, duties or functions.
- (6) The Vice -President shall -
  - (a) in the absence of the President, exercise the powers and perform the functions of the President and
  - (b) at any time perform any duty and exercise, when occasion arises, any power delegated to him by the President under sub-sections(5).

CHAPTER III - CONDUCT OF BUSINESS  
OF COUNCIL AND ITS COMMITTEES

Meetings of Council

11. The Council shall meet and shall, from time to time, make such arrangements with respect to place, day, time, and manner of

स्थगन के बारे में ऐसी व्यवस्था, जैसी कि वह उचित समझे, निम्नलिखित उपबंधों के अधीन रहते हुए, करेगी अर्थात् :-

and adjournment of its meetings as it thinks fit, subject to the following provisions, namely :-

- (क) साधारण सम्मिलन सामान्यतः प्रत्येक छः मास में कम से कम एक बार होगा ;
- (ख) अध्यक्ष, जब कभी वह उचित समझे, विशेष सम्मिलन बुला सकेगा तथा तत्समय परिषद् का गठन करने वाले सदस्यों की कुल संख्या के एक तिहाई सदस्यों द्वारा हस्ताक्षरित अध्यक्षता पर, विशेष सम्मिलन बुलायेगा ;
- (ग) प्रत्येक सम्मिलन की अध्यक्षता, अध्यक्ष द्वारा और उसकी अनुपस्थिति में उपाध्यक्ष द्वारा तथा अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष दोनों की अनुपस्थिति में किसी भी ऐसे सदस्य द्वारा की जायेगी जो सम्मिलन के लिये उपस्थित सदस्यों द्वारा उस अवसर पर अध्यक्षता करने के लिये चुना जाय ,
- (घ) किसी भी सम्मिलन में समस्त प्रश्नों का विनिश्चय उपस्थित तथा मतदान करने वाले सदस्यों के बहुमत से किया जायेगा और मतों के बराबर-बराबर होने की दशा में, अध्यक्षता करने वाले व्यक्ति का द्वितीय या निर्णायक मत होगा और वह उसका प्रयोग करेगा ,
- (ङ) उपस्थित सदस्यों के नाम और प्रत्येक सम्मिलन की कार्यवाहियों का कार्यवृत्त इस प्रयोजन के लिये दी जाने वाली पुस्तक में अभिलिखित किया जायेगा ।
- (च) कार्यवृत्त का अनुमोदन परिषद् द्वारा उसी सम्मिलन में या ठीक आगामी सम्मिलन में किया जायेगा और उस पर अध्यक्ष द्वारा या उस सम्मिलन की अध्यक्षता करने वाले व्यक्ति द्वारा हस्ताक्षर किये जायेंगे तथा उसकी एक प्रतिलिपि अनुमोदन की तारीख से पन्द्रह दिन के भीतर, राज्य सरकार को या राज्य सरकार के ऐसे अधिकारी को अग्रेषित की जायेगी जिसे राज्य सरकार इस संबंध में विनिर्दिष्ट करे ।

- (a) an ordinary meeting shall generally be held at least once every six months ;
- (b) the president may, whenever, he thinks fit and shall, on a requisition signed by not less than one third of the total number of members constituting the council for the time being, call a special meeting,
- (c) every meeting shall be presided over by the president and in his absence by the Vice-President and in the absence of both the President and the Vice- President, by any member chosen by the members present for the meeting to preside for the occasion;
- (d) all questions at any meeting shall be decided by a majority of the members present and voting and in case of equality of votes, the person presiding shall have and exercise a second or casting vote ;
- (e) the names of the members present and the minutes of the proceedings of each meeting shall be recorded in a book to be provided for the purpose;
- (f) the minutes shall be approved by the Council in the same meeting or the meeting next following and signed by the President or the person presiding at the meeting and a copy thereof shall be forwarded to the State Government or to such officer of the State Government as the State Government may specify in his behalf, within fifteen days from the date of approval.

गणपूर्ति

Quorum

- 12. (1) विशेष सम्मिलन के लिये गणपूर्ति, ग्यारह सदस्यों से होगी, गणपूर्ति और साधारण सम्मिलन के लिये गणपूर्ति चार सदस्यों से होगी ।
- (2) यदि परिषद् के किसी विशेष या साधारण सम्मिलन में गणपूर्ति न हो तो अध्यक्ष सम्मिलन को उतने समय के लिये या ऐसे अन्य दिन के लिये जैसा कि वह उचित समझे, स्थगित कर देगा और

- 12.(1)The quorum for a special meeting shall be of eleven members and that for an ordinary meeting shall be of four members.
- (2) If in any special or ordinary meeting of the Council a quorum is not present, the President shall adjourn the meeting to such hour or other day as he may think fit, and business which would have been

वह कामकाज, जो मूल सम्मिलन के समक्ष उसमें गणपूर्ति होने की दशा में लाया जाता, स्थगित सम्मिलन के समक्ष लाया जायेगा तथा उसमें सम्पादित किया जायेगा चाहे, उसमें गणपूर्ति हो या न हो।

#### समितियों के सम्मिलन

13. (1) धारा 9 के अधीन, गठित समितियां प्रति वर्ष आवश्यकतानुसार, कितनी ही बार किन्तु कम से कम दो बार ऐसे समय और स्थान पर, जो कि परिषद् द्वारा नियत किया जाय, सम्मिलन करेगी।
- (2) जब तक कि नियमों द्वारा अन्यथा उपबंधित न किया जाय, समिति के कुल सदस्यों की संख्या के एक-तिहाई से गणपूर्ति होगी और समिति के समस्त कार्य, उपस्थित तथा मत देने वाले सदस्यों के बहुमत द्वारा विनिश्चित किये जायेंगे।

परिषद् तथा उसकी समितियों में होने वाली रिक्तियों से कार्यों, आदि का अविधिवत् न होना

14. परिषद् या उसकी किसी समिति के किसी भी कार्य या कार्यवाही को, केवल इस आधार पर प्रश्नगत नहीं किया जायेगा कि यथास्थिति परिषद् या समिति में कोई रिक्ति है या उसके गठन में कोई त्रुटि है।

#### सदस्यों के लिये पारिश्रमिक का प्रतिषेध

15. परिषद् द्वारा किसी भी सदस्य को, किसी भी प्रकार का कोई पारिश्रमिक या भत्ता, राज्य सरकार की पूर्व मंजूरी से ही तथा राज्य सरकार द्वारा इस संबंध में बनाये गये नियमों के अनुसार ही दिया जायेगा अन्यथा नहीं।

#### चौथा अध्याय - परिषद् निधि, बजट तथा संपरीक्षा

##### परिषद् निधि का गठन

16. (1) एक निधि स्थापित की जायेगी जो परिषद् निधि कहलाएगी और उसमें निम्नलिखित जमा किये जायेंगे :-
- (क) इस अधिनियम के अधीन किये गये रजिस्ट्रीकरणों के संबंध में संग्रहित समस्त फीस,
- (ख) इस अधिनियम के अधीन परिषद् द्वारा संचालित की गई परीक्षाओं के संबंध में संग्रहित समस्त फीस

brought before the original meeting, if there has been a quorum present, shall be brought before, and transacted at, the adjourned meeting, whether there is a quorum present or not.

#### Meetings of Committees

- 13.(1) The committees constituted under section 9 shall meet as often as may be necessary but not less than twice in each year at such time and place as may be appointed by the council.
- (2) Unless otherwise provided by rules one-third of the total number of members of the Committee shall form a quorum and all the acts of the Committee shall be decided by a majority of the members present and voting.

#### Vacancies in the Council and Committees thereof not to invalidate acts etc.

14. No act or proceeding of the Council or any Committee thereof shall be called in question on the ground merely of the existence of any vacancy in, or any defect in the constitution of the Council or the Committee, as the case may be.

#### Prohibition of remuneration of Members.

15. No member shall be granted any remuneration or allowance of any kind whatsoever by the Council except with the previous sanction of the State Government and in accordance with the rules made by the State Government in this behalf.

#### CHAPTER IV- COUNCIL FUND, BUDGET AND AUDIT

##### Constitution of Council Fund

- 16.(1) There shall be formed a Fund to be called the Council Fund and there shall be credited thereto -
- (a) all fees collected in respect of registrations made under this Act.
- (b) all fees collected in respect of examinations conducted by the Council under this Act.

- (ग) कोई भी अन्य फीस जो परिषद् द्वारा इस अधिनियम या उसके अधीन बनाये गये नियमों तथा विनियमों के अधीन प्रभारित तथा संग्रहित की जाय,
- (घ) कोई भी अनुदान या उधार जो केन्द्रीय सरकार या राज्य सरकार द्वारा इस अधिनियम के प्रयोजन के लिये दिये जाये ।
- (ङ) कोई भी अनुदान या उधार जो किसी व्यक्ति द्वारा इस अधिनियम में प्रयोजन के लिये दिये जाये ।
- (च) समस्त ऐसी राशियां जो परिषद् द्वारा संदान, न्यास, वसीयत या किसी अन्य अनुदान के रूप में प्राप्त की जाये ।
- (2) उपधारा (1) के अधीन स्थापित की गई परिषद् निधि उन समस्त व्ययों तथा दायित्वों की पूर्ति करने के लिये खर्च की जायेगी जो कि परिषद् द्वारा इस अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिये उचित रूप से उपगत किये गये हो ।
- (3) परिषद् निधि में जमा हुए समस्त धन स्टेट बैंक आफ इंडिया में या बैंककारी कम्पनी (उपक्रमों का अर्जन और अन्तरण), 1977 (क्रमांक 5 सन् 1970) की प्रथम अनुसूची के कालम 2 में विनिर्दिष्ट किये गये किसी अन्य बैंक में या किसी सहकारी बैंक में जमा किये जायें और ऐसे व्यक्ति या व्यक्तियों द्वारा तथा ऐसी रीति में उनका उपयोग किया जायेगा जैसा कि विहित किया जाये ।
- (c) any other fee that may be charged and collected by the Council under this Act or the rules and regulations made there-under;
- (d) any grants or loans that may be made by the Central Government or the State Government for the purpose of this Act;
- (e) any grants or loans that may be made by any person for the purpose of this act;
- (f) all sums that may be received by the Council by way of donations, trust, bequest or any other grant .
- (2) The council fund formed under sub-section (1) shall be expended to meet all expenses and liabilities properly incurred by the Council for carrying out the purposes of this Act.
- (3) All moneys standing at the credit of the Council Fund shall be deposited in the State Bank of India or in any other Bank specified in column 2 of the First Schedule to the Banking Companies ( Acquisition and Transfer of Undertakings ) Act. (No.5 of 1970) or a co-operative Bank and shall be operated upon by such person, or persons and in such manner as may be prescribed.

**लेखे तथा संपरीक्षा**

- 17. (1) परिषद् के लेखे, ऐसी तारीख के पूर्व तथा ऐसे अंतरालों पर और ऐसी रीति में जैसा कि विहित किया जाये तैयार किये जायेंगे ।
- (2) परिषद् के लेखाओं की संपरीक्षा स्थानीय निधि लेखा संचालक द्वारा की जायेगी और वे छत्तीसगढ़ स्थानीय निधि संपरीक्षा अधिनियम 1973 (क्रमांक 43 सनों 1973) के उपबंधों के अधीन होंगे ।
- (3) जैसे ही परिषद् के लेखाओं की संपरीक्षा हो जाये, परिषद् उनकी एक प्रतिलिपि उस पर स्थानीय निधि लेखा संचालक की रिपोर्ट की प्रतिलिपि के साथ राज्य सरकार को ऐसे रीति में भेजेगी जो कि विहित की जाय।

**Accounts and Audit**

- 17.(1)The accounts of the Council shall be prepared before such date and at such intervals and in such manner as may be prescribed.
- (2) The accounts of the Council shall be audited by the Director of Local Fund Accounts and shall be subject to the provisions of the Chhattisgarh Sthaniya Nodhi Sampariksha Adhinyam 1973 (No. 43 of 1973).
- (3) As soon as the accounts of the Council are audited, the Council shall send a copy [ thereof together with a copy] of the report of the Director of Local Fund Accounts thereon , to the State Government in such manner as may be prescribed.



## बजट

18. (1) रजिस्ट्रार ऐसे प्रारूप में, जैसा कि विहित किया जाये, आगामी वित्तीय वर्ष के संबंध में बजट तैयार करवायेगा और प्राक्कलित प्राप्तियां तथा व्यय दर्शाये जायेंगे और उसे परिषद् के समक्ष ऐसे समय पर, तथा ऐसी रीति में रखवायेगा जैसा कि विहित किया जाये
- (2) उस सम्मिलन की, जिसमें बजट पारित किया गया हो, तारीख से पन्द्रह दिन के भीतर वह (बजट) राज्य सरकार को या राज्य सरकार के ऐसे अधिकारी को, जिसे राज्य सरकार इस संबंध में विनिर्दिष्ट करे, अग्रेषित किया जायेगा।
- (3) यदि राज्य सरकार की यह राय हो कि उसको इस प्रकार अग्रेषित किये गये बजट के प्रावधान इस अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिये पर्याप्त नहीं हैं, तो वह (सरकार) बजट को, उसमें ऐसे उपान्तरण करने के लिये, जैसे कि राज्य सरकार द्वारा सुझाये जायें, परिषद् को वापस कर देगी।
- (4) परिषद्, इस बात के लिये सक्षम होगी कि वह ऐसी रकमों का, जो कि आवश्यक हों, एक शीर्ष के दूसरे शीर्ष में और ऐसे शीर्षों का गौण शीर्षों के अंतर्गत पुनर्विनियोग करें।
- (5) परिषद्, जैसा और जब अपेक्षित हो, अनुपूरक बजट, ऐसे प्रारूप में और ऐसी तारीख तक, जो कि विहित की जाय, पारित कर सकेगी और उपधारा (2), (3) तथा (4) के उपबंध ऐसे अनुपूरक बजट को लागू होंगे।

पांचवा अध्याय - परिषद् का रजिस्ट्रार  
तथा उसके अन्य कर्मचारी

## रजिस्ट्रार

- 19 (1) परिषद् राज्य सरकार को पूर्व मंजूरी से, एक रजिस्ट्रार नियुक्त करेगी। रजिस्ट्रार परिषद् का पूर्णकालिक वैतनिक अधिकारी होगा और उसकी सेवा के निबंधन तथा शर्तें जिनके अंतर्गत अनुशासनिक नियंत्रण और अपील का अधिकार आते हैं, ऐसी होंगी जो कि विहित की जाये:

परन्तु रजिस्ट्रार का पद दो माह से अनधिक कालावधि के लिये रिक्त रहने की दशा में, परिषद् किसी भी व्यक्ति को रजिस्ट्रार के रूप में कार्य करने के लिये नियुक्त कर सकेगी।

## Budget

- 18.(1)The registrar shall cause to be prepared, in such form as may be prescribed, a budget in respect of the financial year next ensuing showing the estimated receipts and expenditure and shall cause it to be laid before the Council at such time and in such manner as may be prescribed.
- (2) Within fifteen days from the date of the meeting in which the budget is passed it shall be forwarded to the State Government or such officer of the State Government as the State Government may specify in this behalf.
- (3) If the State Government is of the opinion that provisions of budget so forwarded to it are not adequate for carrying out the purposes of the Act, it shall return the budget to the Council or such modification as may be suggested by the State Government.
- (4) The Council shall be competent to re-appropriate such amounts as may be necessary from one head to another and within such heads or minor heads.
- (5) The Council may, as and when required, pass a supplementary budget in such form and by such date as may be prescribed and the provisions of sub-sections (2), (3) and (4) shall apply to such supplementary budget.

## CHAPTER V- REGISTRAR AND OTHER EMPLOYEES OF THE COUNCIL

## Registrar

- 19.(1)The Council shall, with the previous sanction of the State Government, appoint a Registrar. The Registrar shall be a full time salaried officer of the Council and terms and conditions of his service including disciplinary control and right of appeal shall be such as may be prescribed;

provided that in the event of any vacancy occurring in the office of the Registrar for a period of not exceeding two months, the Council may appoint any person to act as Registrar

(2) रजिस्ट्रार, परिषद् का प्रमुख कार्यपालक अधिकारी होगा और परिषद् के समस्त कर्मचारी उसके अधीनस्थ होंगे। वह परिषद् का, धारा 9 के अधीन गठित कार्यकारिणी समिति का तथा समस्त अन्य समितियों का, उस समिति को छोड़कर जिसे रजिस्ट्रार के आचरण के संबंध में जांच की जा रही हो, सचिव होगा।

(2) The Registrar shall be the principal executive officer of the Council and all employees of the Council shall be subordinate to him. He shall be the Secretary of the Council, Executive Committee and all other Committees constituted under section 9 except the committee in which the conduct of the Registrar is under enquiry.

**परिषद् के अन्य कर्मचारी**

**Other Staff of Council**

20. परिषद् ऐसे कर्मचारियों की नियुक्ति कर सकेगी जिन्हें कि वह इस अधिनियम के अधीन अपने कृत्यों के दक्ष पालन के लिये आवश्यक समझे और कर्मचारियों की संख्या तथा उनके प्रवर्ग और उनकी सेवा के निबंधन तथा शर्त ऐसी होगी जैसी कि विहित की जाय।

20. The Council may appoint such employees as it may think necessary for the efficient performance of its functions under this Act and the strength and the categories of employees and their terms and conditions of service shall be such as may be prescribed.

**छठवां अध्याय - रजिस्ट्रीकरण**

**CHAPTER VI-REGISTRATION**

**होमियोपैथी का राज्य रजिस्टर**

**State Register of Homeopathy**

21. (1) परिषद् होमियोपैथी के व्यवसायियों का एक रजिस्टर, जो होमियोपैथी के राज्य रजिस्टर के नाम से ज्ञात होगा, ऐसे प्रारूप में तथा ऐसी विशिष्टियां अन्तर्विष्ट करते हुये, जो कि विहित की जाय, विहित रीति में, रखवायेगी।

21.(1)The Council shall cause to be maintained in the prescribed manner a register of [State Register of Homeopathy ] practitioners of Homoeopathy to be known as the State Register of Homoeopathy in such form and containing such particulars as may be prescribed.

(2) रजिस्ट्रार का यह कर्तव्य होगा कि वह इस अधिनियम के तथा परिषद् द्वारा दिये गये किसी भी आदेश के उपबंधों के अनुसार राज्य रजिस्टर को बनाये रखे और समय-समय पर उस रजिस्टर को पुनरीक्षित करे तथा उसे राजपत्र में एवं ऐसी अन्य रीति में प्रकाशित करे जैसी कि विहित की जाय।

(2) It shall be the duty of the Registrar to keep and maintain the State Register in accordance with the provisions of this Act and of any order made by the Council and from time to time to revise the register and publish it in the Gazette and in such other manner as may be prescribed.

(3) ऐसा रजिस्टर भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 (क्रमांक 1 सन् 1872) के अर्थ के अंतर्गत लोक दस्तावेज समझा जायेगा और राजपत्र में प्रकाशित की गई प्रतिलिपि द्वारा साबित किया जा सकेगा।

(3) Such register shall be deemed to a public document within the meaning of the India Evidence Act 1872 (No. 1 of 1872) and may be proved by a copy published in the Gazette.

**रजिस्ट्रीकरण के लिये हकदार व्यक्ति**

**Persons entitled to be registered**

22. (1) प्रत्येक व्यक्ति, जो अनुसूची में वर्णित मान्य अर्हता रखता हो, किसी भी समय रजिस्ट्रार को विहित प्रारूप में आवेदन करने पर और ऐसी फीस को संदाय करने पर, जो कि विहित की जाय, अपना नाम रजिस्टर में प्रविष्ट करवाने का हकदार होगा।

22.(1)Every person who possesses recognised qualification mentioned in the Schedule shall, at any time on an application made in the form prescribed to the Registrar and on payment of such fee as may be prescribed be entitled to have his name entered in the registrar. ( Persons entitled to be registered .)

- (2) ऐसे प्रत्येक व्यक्ति का नाम, जो निरसित एक्ट के अधीन तैयार किये गये रजिस्टर में 15 सितम्बर, सन् 1975 के ठीक पूर्ववर्ती दिन को दर्ज था, इस अधिनियम के अधीन रखे जाने वाले रजिस्टर में, ऐसे व्यक्ति से आवेदन करने की या किसी फीस का संदाय करने की अपेक्षा किये बिना ही, प्रविष्ट किया जायेगा।

परन्तु ऐसा व्यक्ति, ऐसी फीस का संदाय ऐसी रीति में, जो कि विहित की जाये, 15 सितम्बर, सन् 1975 से दो वर्ष की कालावधि के भीतर करेगा और ऐसा करने में उसके द्वारा चूक करने पर उसका नाम रजिस्टर से हटा दिया जायेगा और ऐसे व्यक्ति द्वारा ऐसे प्रारूप में, ऐसी और कालावधि के भीतर आवेदन करने पर तथा ऐसी अतिरिक्त फीस का संदाय करने पर, जैसा कि विहित किया जाये, रजिस्टर में पुनः प्रविष्ट किया जायेगा :

परन्तु यह और भी कि पुनः प्रविष्ट के लिये कोई भी आवेदन, पूर्ववर्ती परन्तुक के अधीन विहित की गई कालावधि का अवसान होने के पश्चात् ग्रहण नहीं किया जायगा, किन्तु इससे आवेदक के इस धारा के अधीन नवीन रूप से रजिस्ट्रीकरण कराने के अधिकार पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

- (3) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यवसायी को रजिस्ट्रीकरण प्रमाण पत्र विहित प्रारूप में दिया जायेगा, ऐसे प्रमाण पत्र के खो जाने, विरूपित हो जाने या नष्ट हो जाने की दशा में, उसकी दूसरी प्रति दस रूपये फीस का संदाय करने पर जारी की जायेगी और इस प्रकार जारी किये गये प्रमाण पत्र पर दूसरी प्रति अंकित किया जायेगा।

#### रजिस्टर में अतिरिक्त अर्हता की प्रविष्टि

23. यदि कोई व्यक्ति, जिसका नाम राज्य रजिस्टर में दर्ज किया जा चुका हो, होमियोपैथी में कोई पदवी, उपाधि, उपाधि-पत्र या अन्य अर्हता अभिप्राप्त कर ले, तो वह इस संबंध में आवेदन करने पर तथा पांच रूपये फीस का संदाय करने पर, रजिस्टर में अपने नाम के सामने, या तो पूर्व में की गई किसी प्रविष्टि के स्थान पर या उसके अतिरिक्त, ऐसी प्रविष्टि कराने का हकदार होगा, जिसमें ऐसी अन्य पदवी, उपाधि, उपाधि-पत्र या अन्य अर्हता कथित की जायेगी।

- (2) The name of every person who on the day immediately preceding the 15th day of September 1975, was registered in the register prepared under the repealed Act shall be entered in the register under this Act without such person being required to make an application or to pay any fee :

Provided that such person shall pay such fee in such manner as may be prescribed within a period of two years from the 15th day of September 1975, and on his failure to do so his name shall be removed from the register and shall be re-entered in the register on an application made by such person in such form, within such further period and on payment of such additional fee as may be prescribed.

Provided further that on application for re-entry shall be entertained after the expirations of the period under the preceding proviso, but it shall not prejudice the right of the applicant to seek fresh registration under this section.

- (3) Every registered practitioner shall be given a certificate of registration in the prescribed form. In the event of such certificate being lost, defaced or destroyed a duplicate thereof shall be issued on payment of a fee of ten rupees and the certificate so issued shall be marked duplicate.

#### Entry of additional qualification in the Register

23. If any person whose name is registered in the State Register obtains any title, degree, diploma or other qualification in Homoeopathy he shall on application made in this behalf and on payment of a fee of five rupees be entitled to have an entry stating such other title, degree, diploma or other qualification made against his name in the register either in substitution for or in addition to any entry previously made.

**चिकित्सीय व्यवसाय के लिये अस्थायी रजिस्ट्रीकरण**

**Provisional Registration for medical practice**

24. उस व्यक्ति का , जिसने अर्हक परीक्षा उत्तीर्ण कर ली हो, उसके द्वारा इस संबंध में आवेदन करने पर, रजिस्टर में अस्थायी रूप से रजिस्ट्रीकरण किया जायेगा जिससे कि वह -

24. A person who has passed the qualifying examination, on application made by him in this behalf, shall be granted provisional registration in the Register in order to enable him to partice medicine -

(क) उस दशा में जब कि मान्य अर्हता अभिप्राप्त करने के लिये पाठ्यक्रम में , उसको ऐसी अर्हता प्रदान की जाने के पूर्व, प्रशिक्षण प्राप्त करने की कोई कालावधि सम्मिलित हो, तो किसी अनुमोदित संस्था में चिकित्सा का व्यवसाय कर सके ,

(a) in an approved institution, if the course of study includes a period of training to be undergone for obtaining a recognised qulaification before such qualification is conferred on him ;

(ख) इस अधिनियम के उपबंधों के अनुसार परिषद् वि.वि. द्वारा किये जाने वाले दीक्षांत -समारोह में , उसे मान्य अर्हता प्रदान की जाने तक चिकित्सा का व्यवसाय कर सके ।

(b) till the recognised qualification is conferred upon him at a convocation held by the Council in accordance with the provision of this Act.

**रजिस्टर से नाम का हटाया जाना**

**Removal of names from the register**

25. (1) यदि कोई रजिस्ट्रीकृत व्यवसायी ,ऐसे सम्यक जांच के पश्चात् जो कि परिषद् द्वारा विहित रीति में की गई हो, किसी अवचार की दोषी पाया जाय तो परिषद् -

25.(1)If a registered practitioner has been, after due inquiry held by the Council in the manner prescribed, found guilty of any misconduct, the Council may -

(क) ऐसे व्यवसायी को संबोधित करते हुए चेतावनी का पत्र जारी कर सकेगी , या

(a) issue a letter of warning addressed to such practitioner; Or

(ख) यह निर्देश दे सकेगी कि ऐसे व्यवसायी का नाम , -

(b) direct that the name of such practitioner .

(एक) रजिस्टर से ऐसी कालावधि के लिये हटा दिया जाय जो कि निर्देश में विनिर्दिष्ट की जाय, या

(i) to be removed from the register for such period a may be specified in the direction, or

(दो) रजिस्टर से स्थायी रूप से हटा दिया जाये ।

(ii) be removed from the register permanently.

**स्पष्टीकरण -** इस धारा के प्रयोजन के लिये अवचार से अभिप्रेत है -

**Explanation -** For the purpose of this section misconduct shall mean -

(एक) रजिस्ट्रीकृत व्यवसायी का दण्ड न्यायालय द्वारा किसी ऐसे अपराध के लिये दोषसिद्ध ठहराया जाना जिसमें नैतिक अधमता अन्तर्वलित हो और जो दण्ड प्रक्रिया संहिता , 1973 (क्रमांक 2 सन् 1974) के अर्थ के अंतर्गत संक्षेप हो,

(i) conviction of the registered practitioner by a criminal court for an offence which involves moral turpitude and which is congnozable within the meaning of the Code of Criminal Procedure, 1973 (No.2 of 1974);

(दो) किसी वृत्ति के संबंध में गर्हित आचरण अर्थात् वह वृत्तिक अवचार जो होमियोपैथी केन्द्रीय परिषद् अधिनियम , 1973 (क्रमांक 59 सन् 1973 की धारा 24 की उपधारा (2) के अधीन विनियमों द्वारा विनिर्दिष्ट किया गया है )

(ii) infamous conduct in any professional respect that is to say professional misconduct specified by the regulations under sub - section (2) of section 24 of the Homoeopathy Central Council Act, 1973(No. 59 of 1973)

(2) परिषद्, पर्याप्त हेतुक दर्शाये जाने पर, किसी भी समय वह निर्देश दे सकेगी कि इस प्रकार से हटाया गया व्यवसायी का नाम, ऐसी शर्तों पर तथा ऐसी अतिरिक्त फीस का संदाय करने पर, जो धारक, प्रामिकर्त्ता या ग्रहिता होमियोपैथी का व्यवसाय करने के लिये अर्हित है, कोई भी उपाधि या उपाधि-पत्र प्रदान नहीं करेगा या कोई अनुज्ञप्ति मंजर नहीं करेगा या कोई प्रमाण-पत्र या अन्य कोई दस्तावेज जारी नहीं करेगा।

(3) परिषद्, स्वप्रेरणा से या किसी व्यक्ति के आवेदन पर, सम्यक् तथा उचित जांच करने के पश्चात् और संबंधित व्यक्ति को सुनवाई का अवसर देने के पश्चात् रजिस्टर में रजिस्ट्रीकृत कर सकेगी या किसी भी प्रविष्टि को रद्द कर सकेगी या उसमें परिवर्तन कर सकेगी यदि परिषद् की यह राय हो कि ऐसी प्रविष्टि आवश्यक है अथवा कपटपूर्वक या गलती से की गई थी।

(4) परिषद् स्वप्रेरणा से या किसी व्यक्ति के आवेदन पर सम्यक् और उचित जांच करने के पश्चात् रजिस्टर से किसी भी व्यवसायी का नाम हटा सकेगी। यदि -

(क) उसकी मृत्यु हो गई हो।

(ख) उसने व्यवसाय करना छोड़ दिया हो।

(ग) उसने, इस कारण से कि वह होमियोपैथी से भिन्न किसी चिकित्सा पद्धति का व्यवसायी है, होमियोपैथी का व्यवसाय करना छोड़ दिया हो।

(5) इस धारा के अधीन जांच करने में, यथास्थिति परिषद् या परिषद् द्वारा प्रयोजन के लिये नियुक्त की गई समिति, भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 (क्रमांक 1 सन् 1872) के अर्थ के अंतर्गत न्यायालय समझी जायेगी तथा वह लोक सेवक (जांच) अधिनियम, 1850 (क्रमांक 37 सन् 1850) के अधीन नियुक्त किये गये आयुक्त की समस्त शक्तियों का प्रयोग करेगी और ऐसी जांचें, जहां तक संभव हो, लोक सेवक (जांच) अधिनियम, 1850 (क्रमांक 37 सन् 1850) की धारा 3, 5 तथा 8 से 20 तक के उपबंधों के अनुसार संचालित की जायेगी।

राज्य रजिस्टर में प्रविष्ट किये गये नामों का प्रकाशन

26.(1) रजिस्ट्रार, प्रतिवर्ष और समय-समय पर, जैसा कि अवसर के अनुसार अपेक्षित हो, परिषद् द्वारा इस संबंध में नियत की जाने वाली तारीख को या

(2) The Council may on sufficient cause being shown, direct at any time that the name of the practitioner so removed shall be re-entered in the register on such conditions and on payment of such further fee as the Council may impose.

(3) The Council may, on its own motion or on the application of any person, after due and proper enquiries and giving an opportunity to the person concerned of being heard, cancel or alter any entry in the register if, in the opinion of the Council, such entry was fraudulently or incorrectly made.

(4) The council may on its own motion or on the application of any person, after due and proper enquiries, remove the name of any practitioner from the register, if, -

(a) he has expired;

(b) he has ceased to practise;

(c) he being a practitioner in any system of medicine other than Homoeopathy has ceased to practise Homoeopathy.

(5) In holding enquiries under this section the Council or the Committee appointed by the Council for the purpose, as the case may be, shall be deemed to be a Court within the meaning of the Indian Evidence Act, 1872 (No. 1 of 1872), and shall exercise all the powers of a Commissioner appointed under the Public Servant (Inquiries) Act, 1850 (No. 37 of 1850), and such enquiries shall be conducted, as far as may be, in accordance with the provisions of sections 3, 5, 8 to 20 of the Public Servant (Inquiries) Act 1850 (No. 37 of 1850)

Publication of names entered in the State Register

26.(1) The Registrar shall, in every year and from time to time as the occasion may require, on or before a date to be fixed in this

उसके पूर्व, रजिस्टर में तत्समय प्रविष्ट किये गये नामों की पूर्ण या अनुपूरक सूची, राजपत्र में तथा ऐसी अन्य शीति में, जैसी कि परिषद् उपबंधित करे, प्रकाशित करवायेगा तथा उसमें :-

- (क) ऐसे प्रत्येक व्यक्ति का, जिसका कि नाम रजिस्टर में प्रविष्ट है, रजिस्ट्रांकित पता और इसके द्वारा धारित पद या उसका वास्तविक नियोजन दिया जायेगा और
- (ख) ऐसे प्रत्येक व्यक्ति की रजिस्ट्रांकित पदवियां, उपाधियां, उपाधि-पत्र तथा अन्य अर्हताएं और वह तारीख दी जायेगी जिसको कि ऐसी प्रत्येक पदवी, उपाधि या उपाधि पत्र दिया गया हो या ऐसी अर्हता प्रमाणित की गई हो।

परन्तु, रजिस्ट्रार उन रजिस्ट्रीकृत व्यवसायियों के नाम समय-समय पर राजपत्र में प्रकाशित करवायेगा जिनके कि नाम इस अधिनियम के किन्हीं भी उपबंधों के अधीन, रजिस्टर में से सम्यक् रूप से हटा दिये गये हों।

- (2) किसी भी कार्यवाही में यह उपधारणा की जायेगी कि ऐसी सूची में प्रविष्ट किया गया प्रत्येक व्यक्ति रजिस्ट्रीकृत व्यवसायी है और कोई भी ऐसा व्यक्ति, जो इस प्रकार सूची में प्रविष्ट न किया गया हो, रजिस्ट्रीकृत व्यवसायी नहीं है :

परन्तु ऐसे व्यक्ति के मामले में, जिसका कि नाम, सूची के अंतिम प्रकाशन के पश्चात् रजिस्टर में प्रविष्ट किया गया हो, रजिस्टर में ऐसे व्यक्ति के नाम की प्रविष्टि की रजिस्ट्रार द्वारा हस्ताक्षरित प्रमाणित प्रतिलिपि इस बात की साक्ष्य होगी कि ऐसा व्यक्ति इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत है, ऐसा प्रमाण-पत्र मुफ्त जारी किया जायेगा।

#### सातवां अध्याय - रजिस्ट्रीकृत व्यवसायियों के विशेषाधिकार

##### रजिस्ट्रीकृत व्यवसायी के विशेषाधिकार

27. तत्समय प्रवृत्त किसी विधि में अन्तर्विष्ट किसी बात के होते भी -
- (1) छत्तीसगढ़ विधान मंडल के समस्त केन्द्रीय अधिनियमों में और छत्तीसगढ़ में लागू हुए रूप में समस्त केन्द्रीय अधिनियमों में, जहां तक कि ऐसे अधिनियम भारत के संघिवाण की समस्त अनुसूची की सूची 2 या सूची 3 में विनिर्दिष्ट किये गये विषयों

behalf by the Council, cause to be published in the Gazettee and in such other manner as the Council may provide a full or supplementary list of the names for the time being entered in the register and setting forth :-

- (a) the registered address and appointment held by or actual employment of, each person whose name is entered in the Register; and
- (b) the registered titles, degrees, diploma and other qualifications of each such person and the date on which each such title, degree or diploma was granted or qualification certified :

Provided that the Registrar shall from time to time get published in the Gazette the names of such registered practitioners whose names have been duly removed from the register under any provisions of this Act.

- (2) In any proceeding it shall be presumed that every person entered in such list is a registered practitioner and that any person not so entered is not a registered practitioner;

Provided that in the case of a person whose name has been entered in the register after the last publication of the list, a certified copy signed by the Registrar of the entry of the name of such person in the register, shall be evidence that such person is registered under this Act. Such certificate shall be issued free of charge.

#### CHAPTER VII- PRIVILEGES OF REGISTERED PRACTITIONER

##### Priviteges Registered Practitioner

27. Notwithstanding anything contained in any law for the time being in force -
- (1) The expresssion "legally qualified medical practitioner" or "duly qualified medical practitioner" or any word or expression importing that a person is recognised by law as a medical practitioner or as a member of the medical profession, shall

में से, किसी भी विषय से संबंधित हों, अभिव्यक्ति " वैध रूप से अर्हित चिकित्सा व्यवसायी " या "सम्यक् रूप से अर्हित चिकित्सा व्यवसायी " के अंतर्गत या किसी अन्य शब्द या अभिव्यक्ति, जिससे इस अर्थ का द्योतन होता हो कि कोई व्यक्ति चिकित्सा व्यवसायी के रूप में या चिकित्सा वृत्ति के सदस्य के रूप में विधि द्वारा मान्य है, के अंतर्गत रजिस्ट्रीकृत व्यवसायी आयेगा।

(2) कोई भी प्रमाण-पत्र, जो किसी चिकित्सा व्यवसायी या चिकित्सा अधिकारी से किसी अधिनियम या विधि का बल रखने वाले किसी नियम द्वारा या उसके अधीन अपेक्षित हो, उस दशा में विधि मान्य होगा जब ऐसा प्रमाण पत्र किसी रजिस्ट्रीकृत व्यवसायी द्वारा दिया गया हो,

(3) रजिस्ट्रीकृत व्यवसायी, किसी भी ऐसे होमियोपैथी औषधालय चिकित्सालय, पागलखाने, रुग्णालय या प्रसवालय में, जो राज्य सरकार या स्थानीय प्राधिकारी द्वारा पोषित हो या उससे अनुदान प्राप्त कर रहा हो, या किसी ऐसी लोक या प्राइवेट स्थापना, निकाय या संस्था में, जिसमें ऐसी चिकित्सा पद्धति व्यवहृत होती हो, किसी वृत्तिक पद, उसका पदनाम चाहे जो भी हो, धारण करने के लिये पात्र होगा।

(4) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यवसायी, इस बात का हकदार होगा कि वह राज्य के भीतर चिकित्सा व्यवसायी के रूप में व्यवसाय करे और ऐसे व्यवसाय के संबंध में, औषधियों या अन्य सपित्तों के बारे में, कोई व्यय या प्रभार, या कोई फीस, जिसका कि वह हकदार हो, विधि के सम्यक् अनुक्रम में वसूल करे,

(5) प्रत्येक रजिस्ट्रीकृत व्यवसायी को, यदि वह ऐसी वांछा करे, दण्ड प्रक्रिया संहिता, 1973 (क्रमांक 2 सन् 1974) के अधीन किसी मृत्यु-समीक्षा का कार्य करने से या जूरी सदस्य या असेसर के रूप में कार्य करने से, छूट दी जायेगी।

इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रीकृत न किये गये व्यक्तियों द्वारा व्यवसाय आदि करने का प्रतिषेध

28. तत्समय प्रवृत्त किसी अन्य विधि में अन्तर्विष्ट किसी बात के होते हुए भी

(1) धारा 22 के अधीन रजिस्ट्रीकृत किये गये व्यवसायी से भिन्न कोई भी व्यक्ति, चिकित्सा व्यवसाय नहीं करेगा या प्रत्यक्षतः या विदक्षित

in all Acts of the Legislature of Chhattisgarh and in all Central Acts in their application to Chhattisgarh in so far as such Acts relate to any of the matters specified in list II or list III of the Seventh Schedule to the Constitution of India shall include a registered practitioner ;

(2) a certificate required by or under any Act or rule having the force of law from any medical practitioner or medical officer shall valid if such certificate has been granted by a registered practitioner ;

(3) a registered practitioner shall be eligible to hold any appointment to any professional office by whatever designation called, in any Homoeopathic dispensary, hospital, asylum, infirmary, lying-in-hospital supported by or receiving a grant from the State Government or any local authority, or in any public or private establishment, body or institution dealing with such systems of medicine;

(4) Every registered practitioners shall be entitled to practise within the State as a medical practitioner and to recover in due course of law in respect of such practice any expenses or charges in respect of medicaments or other applicances, or any fees to which he may be entitled;

(5) Every registered practitioner shall be exempted if he so desires from serving on any inquest or as a juror or assessor under the code of Criminal Procedure, 1973 (No. 2 of 1974).

Prohibition to practice etc. of persons not registered under this act

28. Notwithstanding any thing contained in any other [prohibition to practice etc. of persons not registered under this Act] law for the time in force -

(1) No person other than a practitioner registered under section 22 shall practise whether directly or by implication as

तौर पर स्वयं को इस रूप में नहीं जतलायेगा कि वह होमियोपैथी का व्यवसाय करता है या इस व्यवसाय को करने के लिये सक्षम है।

practising or competent to practise Homoeopathy.

(2) रजिस्ट्रीकृत व्यवसायी के भिन्न कोई भी व्यक्ति -

(2) No person other than a registered practitioner -

(क) किसी भी जन्म या मृत्यु प्रमाण-पत्र को, जिसके कि संबंध में तत्समय प्रवृत्त किसी विधि या नियम द्वारा यह अपेक्षित हो कि वह सम्यक् रूप से अर्हित चिकित्सा व्यवसायी द्वारा हस्ताक्षरित या अधिप्रमाणिकृत किया जाय, हस्ताक्षरित या अधिप्रमाणिकृत नहीं करेगा।

(a) shall sign or authenticate a birth or death certificate required by any law or rule for the time being in force to be signed or authenticated by a duly qualified medical practitioner;

(ख) किसी भी चिकित्सीय या शारीरिक योग्यता के प्रमाण-पत्र को, जिसके कि संबंध में तत्समय प्रवृत्त किसी विधि या नियम द्वारा यह अपेक्षित हो कि वह सम्यक् रूप से अर्हित चिकित्सा व्यवसायी द्वारा हस्ताक्षरित या अधिप्रमाणीकृत किया जाय, हस्ताक्षरित या अधिप्रमाणीकृत नहीं करेगा, या

(b) shall sign or authenticate a medical or physical fitness certificate required by any law or rule for the time being in force to be signed or authenticated by a duly qualified medical practitioner; or

(ग) किसी मृत्यु-समीक्षा में या किसी विधि न्यायालय में भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872 (क्रमांक 1 सन् 1872) की धारा 45 के अधीन, चिकित्सा से संबंधित किसी विषय पर, विशेषज्ञ के रूप में साक्ष्य देने के लिये अर्हित नहीं होगा।

(c) shall be qualified to give evidence in any inquest or in any court of law as an expert under section 45 of Indian Evidence Act, 1872 (No. 1 of 1872), on any matter relating to medicine.

उपाधि या उपाधि पत्र का मिथ्या ग्रहण अपराध होगा

False assumption of degree of diploma to be an offence

29. कोई भी व्यक्ति, यह लक्षित करते हुए कि वह मान्य अर्हता रखता है या वह रजिस्ट्रीकृत व्यवसायी है या उसका नाम धारा 53 में निर्दिष्ट की गई सूची में प्रविष्ट है, किसी भी पदवी या लक्षण ( डिस्क्रिप्शन ) का तब तक उपयोग नहीं करेगा या उसे अपने नाम के साथ नहीं जोड़ेगा, जब तक कि वह वास्तव में ऐसी उपाधि, उपाधि-पत्र, अनुज्ञप्ति या प्रमाण-पत्र धारण न करता हो या धारा 22 के अधीन रजिस्ट्रीकृत न हो या निरसित एक्ट की धारा 18 के अधीन रखी गई सूची में उसका नाम दर्ज न हो।

29. No person shall use any title or description or add to his name implying that he holds a recognised qualification or that he is registered practitioner or that his name is entered in the list referred to in section 53 unless he actually holds such degree, diploma, licence or certificate or is registered under section 22 or is borne on the list maintained under section 18 of the repealed Act. False assumption of degree or diploma to be an offence.

उपाधि, उपाधि-पत्र, आदि के अप्राधिकृत रूप से प्रदान किये जाने का प्रतिषेध

Prohibition of un-authorized conferment of degree, diploma etc.

30. परिषद्, विश्वविद्यालय या राज्य सरकार द्वारा प्राधिकृत किसी संस्था से भिन्न कोई भी व्यक्ति, संथा या संस्था यह कथित या लक्षित करते हुए कि किसी उपाधि, उपाधि-पत्र, अनुज्ञप्ति, प्रमाण पत्र या किसी अन्य दस्तावेज का धारक, प्राप्तिकर्ता या ग्रहिता होमियोपैथी का व्यवसाय

30. No person, association or institution, other than the Council, University or an institution authorised by the State Government shall confer, grant or issue any degree, diploma licence, certificate or any other document, stating or implying that the holder, grantee or recipient thereof is qualified to practise the Homoeopathy.



करने के लिये अर्हित है, कोई भी उपाधि या उपाधि-पत्र प्रदान नहीं करेगा या कोई अनुज्ञप्ति मंजूर नहीं करेगा या कोई प्रमाण-पत्र या अन्य कोई दस्तावेज जारी नहीं करेगा।

फीस का वापस न किया जाना

31. वह फीस, जो इस अधिनियम के किन्हीं भी उपबंधों द्वारा या उनके अधीन संदाय की जाने के लिये अपेक्षित हो, वापस नहीं की जायेगी।

आठवां अध्याय - होमियोपैथी की शिक्षा, परीक्षाओं का संचालन  
अध्ययन - पाठ्यक्रम तथा संस्थाओं को मान्यता

परिषद् द्वारा ली जाने वाली परीक्षाएं तथा अध्ययन पाठ्यक्रम और होमियोपैथी में गवेषणा

32. (1) परिषद् विनियमों द्वारा, उसके द्वारा ली जाने वाली परीक्षाओं के लिये, ऐसी परीक्षाओं में प्रवेश हेतु अर्हताओं के लिये, ऐसी परीक्षाओं हेतु अध्ययन - पाठ्यक्रम के लिये, उपाधि, उपाधि-पत्र, प्रमाण-पत्र या वैसे ही अन्य किसी पुरस्कार के लिये, जो कि परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले व्यक्तियों को दिया जाना हो, परीक्षा उत्तीर्ण करने हेतु स्तरमान के लिये, जो कि परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले व्यक्तियों को दिया जाना हो, परीक्षा उत्तीर्ण करने हेतु स्तरमान के लिये तथा ऐसी परीक्षाओं के संबंध में ऐसी अन्य बातों के लिये जो कि आवश्यक हों, उपबंध करेगी और ऐसा प्रशिक्षण देने हेतु आवश्यक संस्थाओं की स्थापना कर सकेगी।

(2) परिषद् स्वयं या राज्य सरकार या केन्द्रीय सरकार की सहायता से होमियोपैथी में गवेषणा संस्था की स्थापना कर सकेगी।

संस्थाओं को मान्यता

33. (1) प्रत्येक मान्यता प्राप्त संस्था परिषद् की उन परीक्षाओं के लिये, जिनके कि लिये उस संस्था को मान्यता दी गई हो, विद्यार्थियों को तैयार करने के लिये हकदार होगी।

(2) कोई भी संस्था, जो इस अधिनियम के अधीन मान्यता प्राप्त करने की वांछ करती हो, रजिस्ट्रारों को ऐसे प्रारूप तथा रीति में और ऐसी फीस के साथ जैसा कि परिषद् विनियमों द्वारा उपबंधित करें, आवेदन भेजेगी।

Non refund of fees

31. Fees required to be paid by or under provisions of this Act shall not be refund

CHAPTER VII- EDUCATION IN HOMOEOPATHY, CONDUCT OF EXAMINATIONS, COURSES OF STUDY AND RECOGNITION OF INSTITUTIONS

Examinations held by the Council  
Courses of studies and research  
Homoeopathy

32. (1) The Council, shall by regulations for the examinations to be held for such examinations, the courses of study, the degree, diploma, or any other like award to persons who pass the examinations such other matters in relation to examinations as may be necessary for giving such training.

(2) The Council may on its own or with the assistance of the State Government or the Central Government establish an institution in Homoeopathy.

Recognition of Institutions

33. (1) Every recognised institution shall be entitled to prepare and conduct examinations of the Council which are recognised.

(2) Any institution desiring to be recognised under this Act shall apply to the Registrar in such form as may be prescribed together with such fee as may be prescribed by regulations, provided that the institution shall have been in existence for a period of not less than five years immediately preceding the date of application.

(3) रजिस्ट्रार आवेदन की परिषद् के समक्ष रखेगा और परिषद् ऐसी जांच करने के पश्चात् जो कि वह आवश्यक समझे, मान्यता दे सकेगी या मान्यता देने से इंकार कर सकेगी या ऐसी शर्तों के अधीन रहते हुए मान्यता दे सकेगी जैसा कि वह उचित समझे :-

परन्तु मान्यता तब तक नहीं दी जायेगी जब तक कि -

(क) आवेदक ने छत्तीसगढ़ चिकित्सीय शिक्षा संस्था (नियंत्रण) अधिनियम, 1973 (क्रमांक 19 सन् 1973) के उपबंधों का अनुपालन न किया हो और उसे चिकित्सीय शिक्षा संस्था स्थापित करने तथा प्रशासित करने या चलाने की अनुज्ञा न दे दी गई हो।

(ख) होमियोपैथी में शिक्षा के न्यूनतम स्तरमानों को, यदि कोई हो, जो होमियोपैथी केन्द्रीय परिषद् अधिनियम, 1973 (क्रमांक 59 सन् 1973) की धारा 20 के अधीन विहित किये गये हों, पूरा न कर लिया हो।

**स्तर को बनाये रखना**

34. परिषद् का यह कर्तव्य होगा कि वह इस बात को सुनिश्चित करे कि शिक्षा में प्रवीणता का यथेष्ट स्तर बना रहे और ऐसा स्तर प्राप्त करने के प्रयोजन के लिये, परिषद् को यह प्राधिकार होगा कि वह परिषद् द्वारा मान्यता प्राप्त किसी संस्था के या किसी ऐसी संस्था के, जिसने मान्यता हेतु आवेदन किया हो, प्राधिकारियों से या उसके शासी निकाय से यह अपेक्षा करे कि वह -

(क) विनियमों द्वारा विहित किसी अध्ययन-पाठ्यक्रम के बारे में या, ऐसी संस्था द्वारा ली गई किसी परीक्षा के बारे में ऐसी विशिष्टियां ऐसी कालावधि के भीतर दे जैसा कि परिषद् द्वारा अपेक्षित किया जाय,

(ख) परिषद् को, महाविद्यालय तथा उसके शासी निकाय की वित्तीय स्थिति की जानकारी दे, और

(ग) परिषद् या होमियोपैथी केन्द्रीय परिषद् या राज्य सरकार द्वारा इस संबंध में नियुक्त किये गये परिदर्शक या निरीक्षक या किसी सदस्य को संस्था का तथा उससे संबद्ध चिकित्सालयों का निरीक्षण करने दे और संस्थाओं द्वारा ली जाने वाली समस्त परीक्षाओं में या किसी परीक्षा में हाजिर रहने दे।

(3) The Registrar shall place the application before the Council and the Council may, after making such enquiry as it may deem necessary, grant or refuse to grant the recognition or grant it subject to such conditions as it deems fit;

Provided that recognition shall not be granted unless -

(a) the applicant has complied with the provisions of the Chhattisgarh Chikitsa-Shiksha Sanstha (niyantran) Adhiniyam, 1973 (no. 19 of 1973) and has granted permission to establish and administer or run the institutio of medical education ;

(b) the mininum standards of education in Homoeopathy, if any, prescribed under section 20 of the Homoeopthy Central Council Act, 1973 (No. 59 of 1973 ) are fulfilled.

**Maintanance of standard**

34. It shall be the duty of the Council to secure the maintenance of an adequate standard of proficiency in education and for the purpose of securing such standard the council shall have authority to call on the authorities or the governing body of any institution recognised by the Council or applying for recognition, --

(a) to furnish within such period such particulars as the Council may require of any course of study prescribed by regulations or any examination field by such institution ;

(b) to furnish the Council the financial position of the college and the governing body ; and

(c) to permit visiter or inspector or any member appointed by the Council or the Central Council of Homoeopathy or the State Government in this behalf to inspect the institution and the hospitals attached to them and to attend at all or any of the examinations held by the institutions.

**परिदर्शकों, निरीक्षकों तथा परिदर्शक समितियों की नियुक्ति**

35. (1) परिषद्, विनियम में उपबंधित किये गये अनुसार, चिकित्सीय संस्थाओं का निरीक्षण करने तथा उनके कार्यकारण के संबंध में रिपोर्ट देने हेतु परिदर्शकों की तथा ऐसी परिदर्शक समितियों की नियुक्ति कर सकेगी जो परिषद् के स्वयं के सदस्यों से या बाहरी व्यक्तियों से, या दोनों से, मिलकर बनेगी। परिदर्शक या परिदर्शक समिति के सदस्य, व्ययों के भाग के रूप में चुकाया जाने वाला ऐसा पारिश्रमिक प्राप्त करेंगे जो कि विहित किया जाय।
- (2) परिषद्, राज्य सरकार की पूर्व मंजूरी से, इतनी संख्या में तथा ऐसी निबन्धनों एवं शर्तों पर निरीक्षकों की नियुक्ति कर सकेगी, जैसा कि विहित किया जाए।
- (3) ऐसे निरीक्षक, परिषद् द्वारा स्थापित या मान्य की गई संस्थाओं का निरीक्षण, परिषद् द्वारा समय-समय पर दिये गये साधारण या विशेष निर्देशों के अनुसार करेंगे तथा ऐसी संस्थाओं में ली गई किसी भी परीक्षा के समय हाजिर रहेंगे और शिक्षा के स्तर की, जिसके अंतर्गत कर्मचारीवृन्द, उपस्कर, प्रशिक्षण तथा अन्य सुविधाएं आती हैं, यथेष्टता के बारे में या ऐसी प्रत्येक परीक्षा, जिसमें कि वे हाजिर रहे हों, की पर्याप्तता के बारे में अपने संप्रेक्षणों से तथा अपनी राय से परिषद् को सूचित करेंगे, तथापि निरीक्षक या परिदर्शक प्रशिक्षण तथा परीक्षा के संचालन में हस्तक्षेप नहीं करेंगे।

**मान्यता का प्रत्याहरण**

36. यदि परिषद् को, निरीक्षण की रिपोर्ट पर से या अन्यथा ऐसा प्रतीत हो कि किसी मान्यता प्राप्त संस्था ने परिषद् की या होमियोपैथी केन्द्रीय परिषद् को अपेक्षाओं के अनुसार प्रशिक्षण का यथेष्ट स्तर नहीं बनाये रखा है, तो परिषद् ऐसी संस्था को दी गई मान्यता किसी भी समय प्रत्याहृत कर सकेगी :

परन्तु मान्यता संबंधी आदेश का प्रत्याहरण किया जाने के पूर्व संस्था को अपेक्षित स्तर प्राप्त करने के लिये युक्तियुक्त अवसर तथा समय दिया जायेगा।

**Appointment of Visitor, Inspectors and Visiting Committees**

- 35.(1)The Council may ; as provided by [Appointment of Visitors Inspectors and Visiting Committees] . Regulations, appoint visitors and visiting committees consisting of its own member or outsiders or both for inspection and to report on the working of medical institutions. A visitor or members of the visiting committee shall receive such remuneration to be paid as part of the expenses as may be prescribed.
- (2) The Council may, with the previous sanction of the State Government, appoint such number of inspectors and on such terms and conditions as may be prescribed.
- (3) Such inspectare shall in accordance with general or special direction of the Council given from time to time, inspect the institutions established by or recognised by the Council and shall attend any examination held at the institutions and shall report to the Council their observations and opinions on the adequacy of the standard of education including staff, equipment, training and other facilities or on the sufficiency of every examination they attend. The inspectors or visitors shall however not interfere with the conduct of the training and the examination.

**Withdrawal of recognition**

36. If it appears to the Council on the report of inspection or otherwise that any recognised institution is not maintaining an adequate standard of training according to the requirements of the Council or of the Central Council of Homoeopathy, the Council may at any time withdraw the recognition granted to such institution.

Provided that before withdrawal of the order for recognition is made the institution shall be given a reasonable opportunity and time to come up to the required standard.

**छात्रवृत्ति , वृत्तिकाएं तथा पारितोषिक**

- 37. (1) परिषद् मान्यता प्राप्त संस्थाओं के विद्यार्थियों को, अपनी निधि में से छात्रवृत्ति, पारितोषक तथा पदक प्रदान कर सकेगी।
- (2) परिषद्, राज्य सरकार की पूर्व मन्जूरी से, -
- (क) निर्धन तथा योग्य विद्यार्थियों को वृत्तिकाएं मंजूर कर सकेगी।
- (ख) भारत में या भारत के बाहर स्थित किसी भी संस्था में, जिसे कि परिषद् उचित समझे, होमियोपैथी में गवेषणा के लिये तथा उच्चतर या विशेष अध्ययन के लिये छात्रवृत्तियां मंजूर कर सकेगी।

**दीक्षांत-समारोह का किया जाना, सम्मानिक उपाधियों का प्रदान किया जाना**

- 38. (1) परिषद् उन व्यक्तियों को, जो परिषद् द्वारा पूर्ववर्ती वर्ष में ली गई परीक्षा में सफल हुए हों, उपाधियां, उपाधि-पत्र तथा अन्य पुरस्कार देने के लिये प्रत्येक वर्ष में एक बार दीक्षान्त समारोह कर सकेगी।
- (2) परिषद्, ऐसे दीक्षान्त समारोह में ख्याति प्राप्त होमियोपैथी व्यवसायी को तथा असाधारण कुशलता वाले अन्य ऐसे व्यक्तियों को सम्मानिक उपाधियां प्रदान कर सकेगी।

**पाठ्य-पुस्तकों आदि का प्रकाशन**

- 39. परिषद्, उसके द्वारा संचालित परीक्षाओं के लिये, उसके द्वारा विहित किये गये अध्ययन-पाठ्यक्रम हेतु पाठ्य-पुस्तकें तैयार कर सकेगी तथा उन्हें प्रकाशित कर सकेगी और परिषद् का जनरल प्रकाशित कर सकेगी।

**नवां अध्याय -नियंत्रण**

**राज्य सरकार का नियंत्रण**

- 40. (1) यदि किसी भी समय राज्य सरकार को यह प्रतीत हो कि परिषद् ने इस अधिनियम द्वारा या उसके अधीन उसको प्रदत्त शक्तियों में से किसी भी शक्ति का प्रयोग करने में चूक की है या उसका अतिरेक किया है या उसका दुरुपयोग किया है या इस अधिनियम द्वारा या उसके अधीन उसको प्रदत्त कर्त्तव्यों में से किसी भी कर्त्तव्य का पालन करने में चूक की है, तो राज्य सरकार, यदि वह ऐसी

**Scholarships, stipends and prizes**

- 37.(1)The Council may grant out of its fund, [Scholarships stipends and prizes], sholarships, prizes and medals to the students of the recoganised institutions.
- (2) The Council may, with prior sanction of the State Government, grant -
- (a) stipends to the poor and deserving students ;
- (b) scholarships for research and higher or special study in Homoeopathy in any institution that the Council may think fit whether in India or abroad.

**Holding of convocation, conferring of Honorary degrees**

- 38.(1)The Council may once in each year hold convocation for presentation of degrees, dipoma and other awards to persons who are successful at the examination conducted by the Council in the preceding year.
- (2) The Council may confer honorary degrees on Homoeopathic practitioner of repute and on other such persons of extra ordinary merit, in such convocation.

**Publication of text books etc**

- 39. The Council may prepare and publish [text books for curses of studies prescribed by it for examinations conducted by it and publish ] a journal of the Council.

**CHAPTER IX - CONTROL**

**Control of State Government**

- 40.(1)If at any time it appears to the State Government that the Council has failed to exercise or has exceded or abused any of the powers conferred upon it by or under this Act or has failed to perform any of the duties conferred upon it by or under this Act the State Government, if it considers such failures, excess or abuse to be of a serious character, notifythe particulars

चूक अतिरेक या दुरुपयोग को गंभीर स्वरूप का समझती है, परिषद् को उसकी विशिष्टियां अधिसूचित करेगी और यदि परिषद् ऐसे समय के भीतर जिसे कि राज्य सरकार इस संबंध में नियत करे, ऐसी चूक, अतिरेक या दुरुपयोग का उपचार करने में असफल रहे, तो राज्य सरकारी परिषद् को पांच वर्षों से अनधिक ऐसी कालावधि के लिये, जो कि वह उचित समझे, विघटित कर सकेगी तथा नवीन परिषद् अस्तित्व में लाने की कार्यवाही करेगी।

(2) उपधारा (1) के अधीन परिषद् का विघटन होने पर निम्नलिखित परिणाम होंगे, अर्थात् :-

(क) परिषद् के समस्त सदस्यों तथा अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष के बारे में यह समझा जायेगा कि उन्होंने ऐसे परिषद् के विघटन की तारीख से अपने पद रिक्त कर दिये हैं।

(ख) इस अधिनियम के अधीन परिषद् की समस्त शक्तियों का प्रयोग तथा समस्त कर्तव्यों का पालन, राज्य सरकार के नियंत्रण के अधीन रहने हुए, प्रशासक कहलाये जाने वाले ऐसे अधिकारी द्वारा किया जाएगा जिसे कि राज्य सरकार, इस संबंध में, अधिसूचना द्वारा, नियुक्त करे।

(ग) परिषद् के निहित समस्त संपत्ति, इस अधिनियम के प्रयोजनों के लिये प्रशासक में न्यासतः निहित हो जायेगी।

(3) उपधारा (2) के खण्ड (ख) के अधीन नियुक्त किया गया प्रशासक, राज्य सरकार द्वारा किसी भी समय हटाया जा सकेगा और उसे ( राज्य सरकार को ) उस अधिकारी के स्थान पर दूसरा अधिकारी नियुक्त करने की शक्ति प्राप्त होगी।

(4) उपधारा (2) के खण्ड (ख) के अधीन प्रशासक नियुक्त किया गया कोई भी अधिकारी, अपनी सेवाओं के लिये परिषद् -निधि से ऐसा पारिश्रमिक प्राप्त करेगा जैसा कि राज्य सरकार द्वारा नियत किया जाय।

(5) प्रशासक उस तारीख से पद पर नहीं रहेगा जो कि यथा पुनर्गठित परिषद् के प्रथम साधारण सम्मेलन के लिये नियत की गई हो।

(6) राज्य सरकार, यदि यह आवश्यक समझे, तो उपधारा (2) के खण्ड (ख) के अधीन नियुक्त किये गये प्रशासक को सलाह तथा मार्गदर्शन देने के प्रयोजन के लिए सात से अनधिक रजिस्ट्रीकृत

thereof to the Council, and if the Council fails to remedy such failures excess or abuse within such time as the State Government may fix in this behalf, the State Government may dissolve the council for such period not exceeding five years as it may think fit and shall take steps to bring into existence a new Council.

(2) Upon the dissolution of the Council under sub-section (1) the following consequences shall ensue, namely :-

(a) all the members as well as the President and the Vice President of the Council shall, as from the date of dissolution of such council, be deemed to have vacated their offices ;

(b) all powers and duties of the Council under this Act shall subject to the control of the State Government, be exercised by an officer to be called the Administrator as the State Government may, by notification, appoint in this behalf.

(c) all property vested in the Council shall vest in the Administrator in trust for the purpose of this Act.

(3) The Administrator appointed under clause (b) of sub-section (2) may at any time be removed by the State Government who shall have power to appoint another officer in his place.

(4) Any officer appointed Administrator under clause (b) of sub-section (2) shall receive from the Council Fund for his services such remuneration as may be fixed by the State Government.

(5) The Administrator shall cease to hold office on the date fixed for the first ordinary meeting of the Council as reconstituted.

(6) The State Government may appoint, if it thinks necessary, an Advisory Committee of Registered practitioners not exceeding seven for the purpose of advise and guidance to the Administrator appointed

व्यवसायियों की एक सलाहकार समिति नियुक्त कर सकेगी। समिति का प्रत्येक सदस्य ऐसी दर से भत्ते प्राप्त करेगा जिस दर से कि भत्ते परिषद् के सदस्य को देय होते हैं।

under clause (b) of sub-section (2) Every member of the Committee shall receive allowances at such rate at which allowances are payable to members of the Council.

**अध्यक्ष या उपाध्यक्ष जानकारी प्रस्तुत करेंगे**

**President or Vice - President to submit information**

41. (1) परिषद् अध्यक्ष या उपाध्यक्ष से यह अपेक्षा कर सकेगी कि यह उसे -

41.(1)The council may require the president or the Vice President [to submit information ] to furnish it with -

(क) परिषद् के प्रशासन से संबंधित किसी भी मामले के बारे में कोई विवरणियां, आंकड़े या कोई अन्य जानकारी दें,

(a) any returns, statistics or any other information, regarding any matter appertaining to the adminisitration of the council.

(ख) किसी भी ऐसे मामले के संबंध में रिपोर्ट या स्पष्टीकरण दे,

(b) a report or explanation on any such matter;

(ग) किसी ऐसे अभिलेख पत्र -व्यवहार, योजना या किन्हीं अन्य ऐसे दस्तावेजों की प्रतिलिपि दें जो कि अध्यक्ष के नाते उनके कब्जे या नियंत्रण में हों जो कि परिषद् के किसी सेवक के कार्यालय में अधिलिखित या फाइल किये गये हों।

(c) a copy of any record, correspondance, plan or other documents which is in his possession or control as President or which is recorded or filed in the office of any servant of the Council.

(2) अध्यक्ष, उपधारा (1) के अधीन की गई प्रत्येक अध्यक्ष अपेक्षा का अनुपालन बिना किसी अनुचित विलम्ब के करेगा।

(2) The President shall comply with every requisition made under sub-section (1) without ureasonable delay.

**परिषद् के आदेश, आदि के निष्पादन को निलंबित करने की शक्ति**

**Power to suspend execution of order etc. of council**

42. यदि राज्य सरकार की यह राय हो कि परिषद् के या परिषद् की समितियों में से किसी भी समिति के या उसके अधीनस्थ किसी अन्य प्राधिकारी या अधिकारी के किसी आदेश का या संकल्प का निष्पादन किया जाना या किसी ऐसे कार्य का किया जाना, जो कि परिषद् द्वारा या उसकी ओर से किया जाने वाला हो या किया जा रहा हो, विधि के या उसके अधीन बनाये गये नियमों के अनुरूप नहीं है या परिषद् के हितों के लिये या लोक हितों के लिये अपायकर है, तो वह (राज्य सरकार) लिखित आदेश द्वारा ऐसे संकल्प या आदेश का निष्पादन निलंबित कर सकेगी या किसी भी ऐसे कार्य के किये जाने का प्रतिषेध कर सकेगी :

42. if in the opinion of the State Government the execution of any order or resolution of the Council or of any of its Committee or any other authority or officer sub-ordinate thereto, or the doing of any act which is about to be done or is being done by or on behalf of the council is not in conformity with law or with the rules made thereunder or is detrimental to the insterests of the Council or the public it may by order in writing suspend the execution of such resolution or order or prohibit the doing of any such act :

परन्तु किसी भी आदेश में, उस आदेश में, उस आदेश के विरुद्ध परिषद् को कारण दर्शाने का युक्तियुक्त अवसर दिये बिना, फेरफार नहीं किया जायेगा या उसे उलटाया नहीं जायेगा।

Provided that no order shall be varied or reverse without giving the Council reasonable oppourtunity of showing cause against the order.

दस्तावेज पेश करने के लिए परिषद् के सेवकों की समन करने पर निर्बन्धन

Restriction on summons of a Council servants to produce documents

43. परिषद् के किसी भी सदस्य या अधिकारी या सेवक को, किसी भी ऐसी विधिक कार्यवाही में, जिसमें कि परिषद् पक्षकार न हो, कोई रजिस्टर या दस्तावेज पेश करने या उसमें अभिलिखित बात को साबित करने के लिये साक्षी के रूप में उपसंज्ञात होने के लिये तब तक अपेक्षित नहीं किया जावेगा, जब तक कि न्यायालय विशेष कारणों से ऐसा निर्देश न दे।

43. No member or officer or servant of the Council shall in any proceeding to which the Council is not a party be required to produce any register or documents or to appear as a witness to prove the matter recorded therein unless the Court for special reasons so directs.

इस अधिनियम के अधीन कार्य करने वाले व्यक्तियों का परित्राण

Indemnity to persons acting under the Act

44. किसी भी व्यक्ति के विरुद्ध, किसी भी ऐसी बात के लिये, जो कि इस अधिनियम के अधीन या उसके अधीन सद्भावपूर्वक की गई हो या जिसका सद्भावपूर्वक किया जाना आशयित रहा हो, कोई भी वाद, अभियोजन या अन्य विधिक कार्यवाही संस्थित नहीं की जायेगी।

44. No suit prosecution or other legal proceeding shall be instituted against any person for anything which is, in good faith done or intended to be done under this Act or under the rules or regulations made thereunder.

परिषद् का रजिस्ट्रार तथा अन्य सेवक लोक सेवक होंगे

Registrar and other servants the Council to be public servants

45. परिषद् का रजिस्ट्रार तथा कोई भी अन्य अधिकारी या सेवक भारतीय दण्ड संहिता, 1860 (क्रमांक 45 सन् 1860) की धारा 21 के अर्थ के अंतर्गत लोक सेवक समझा जायेगा।

45. The Registrar and any other officer or servant of the Council shall be deemed to be a public servant within the meaning of section 21 of the Indian Penal Code 1860 (45 of 1860).

अपराधों का संज्ञान

Cognizance of offences

46. (1) प्रथम वर्ग मजिस्ट्रेट के न्यायालय से, भिन्न कोई भी न्यायालय, इस अधिनियम के अधीन किसी भी अपराध का न संज्ञान करेगा और न उसका विचारण करेगा।

- 46.(1) No Court other than the Court of a Magistrate of First Class shall take cognizance of or try an offence under this act.

- (2) कोई भी न्यायालय इस अधिनियम के अधीन किसी भी अपराध का संज्ञान रजिस्ट्रार द्वारा या ऐसे अन्य अधिकारी द्वारा, जिसे परिषद् साधारण या विशेष आदेश द्वारा इस संबंध में प्राधिकृत करे, की गई लिखित शिकायत पर ही करेगा अन्यथा नहीं।

- (2) No Court shall take cognizance of any offence under this Act except on a complaint in writing by the Registrar or such other officer as the Council may, by general or special order, authorise in this behalf.

असेसर की नियुक्ति

Appointment Assessor

47. (1) किसी जांच में या सामान्यतया उद्भूत होने वाले विधि के प्रश्नों पर परिषद् को सलाह देने के प्रयोजन के लिये, परिषद् द्वारा असेसर की नियुक्ति की जा सकेगी जो एडवोकेट्स एक्ट, 1961 (क्रमांक 25 सन् 1961) के अधीन नामांकित किया गया अधिवक्ता होगा।

- 47.(1) For the purpose of advising the Council on question of law arising in any inquiry or in general, there may be appointed by the Council, an assessor who shall be an Advocate enrolled under the Advocates Act, 1961 (No. 25 of 1961)

(2) इस धारा के अधीन किसी असेसर को या तो सामान्यतः या किसी विशिष्ट जांच या जांचों के वर्ग के लिये नियुक्त किया जा सकेगा और उसे ऐसा पारिश्रमिक संदाय किया जायेगा जो कि परिषद् द्वारा अवधारित किया जाये।

### अपीलें

48. (1) (क) इस अधिनियम के अधीन रजिस्ट्रार के प्रत्येक विनिश्चय या आदेश के विरुद्ध अपील परिषद् को होगी,
- (ख) उस विनिश्चय को छोड़कर जो कि खण्ड (क) के अधीन अपील में परिषद् द्वारा किया गया हो, इस अधिनियम के अधीन परिषद् के प्रत्येक विनिश्चय के विरुद्ध अपील राज्य सरकार को होगी।
- (2) प्रत्येक अपील, ऐसी कालावधि के भीतर ऐसी रीति में तथा ऐसी फीस के साथ की जायेगी जैसा कि विहित किया जाये।
- (3) अपील में, यथास्थिति, परिषद् या राज्य सरकार का विनिश्चय अंतिम होगा।

### अनुसूची को संशोधित करने की शक्ति

49. (1) भारत में या भारत के बाहर स्थित कोई भी विश्वविद्यालय या अन्य ऐसी चिकित्सीय संस्था, जो होमियोपैथी में ऐसी चिकित्सीय अर्हताएं प्रदान करती हो जो कि अनुसूची में सम्मिलित नहीं है, ऐसी अर्हताओं को मान्यता प्राप्त कराने हेतु राज्य सरकार को आवेदन कर सकेगी और राज्य सरकार, परिषद् से परामर्श करने के पश्चात्, अधिसूचना द्वारा, अनुसूची को इस प्रकार संशोधित करेगी कि जिससे ऐसी अर्हता उस अनुसूची में सम्मिलित हो जाये, और ऐसी अधिसूचना में यह निर्देश भी दिया जा सकेगा कि ऐसी अर्हता मान्य अर्हता होगी जबकि वह विनिश्चित की गई तारीख के पश्चात् प्रदान की जाये।
- (2) राज्य सरकार, अधिसूचना द्वारा, अनुसूची को इस प्रकार संशोधित कर सकेगी कि जिससे उसमें होमियोपैथी केन्द्रीय परिषद् अधिनियम, 1973 (क्रमांक 59 सन् 1973) की द्वितीय तथा तृतीय अनुसूची में समय-समय पर सम्मिलित की गई मान्य चिकित्सीय अर्हता सम्मिलित की जा सके।

### शास्ति

50. कोई व्यक्ति, जो इस अधिनियम के उपबंधों में से किसी भी उपबन्ध का या उसके अधीन बनाये गये नियमों में

(2) Any assessor under this section may be appointed either generally or for any particular inquiry or class or inquiries and shall be paid such remuneration as may be determined by the Council.

### Appeals

48. (1) An appeal shall lie to -
- (a) the Council from every decision or order of the registrar under this Act;
- (b) the State Government from every decision of the Council under this Act except a decision in appeal made by the Council under clause (a)
- (2) Every appeal shall be preferred within such period in such manner and with such fee as may be prescribed
- (3) The decision of the Council or the State Government, as the case may be, in appeal shall be final.

### Power to amend schedule

49. (1) Any University or other medical institution in India or outside which grants medical qualifications in Homoeopathy not included in the Schedule may apply to the State Government to have such qualification recognised and the State Government after consulting the council by notification amend the schedule so as to include such qualification therein and such notification may also direct that such notification may also direct that such qualification shall be recognised qualification when granted after a specified date.
- (2) The State Government may, by notification amend the Schedules so as to include therein the recognised medical qualification included in the Second Schedule and Third Schedule to the Homoeopathy Central Council Act, 1973 (59 to 1973) from time to time.

### Penalty

50. Any person who contravenes any of the provision of this Act, or any of the rules



से किसी भी नियम का उल्लंघन करेगा, वह दोषसिद्धि पर, जुर्माने से, जो प्रथम बार दोषसिद्ध ठहराये जाने पर एक हजार रुपये तक का हो सकेगा, दंडनीय होगा और यदि ऐसा उल्लंघन करने वाला व्यक्ति कोई संथा हो, तो ऐसी संथा का प्रत्येक सदस्य जो जानते हुये या जानबूझकर ऐसा उल्लंघन प्राधिकृत करेगा या उसके लिये अनुज्ञा देगा, दोषसिद्ध पर, जुर्माने से, जो प्रथम बार दोष सिद्ध ठहराये जाने पर एक हजार रुपये तक का हो सकेगा तथा प्रत्येक पश्चात्वर्ती दोषसिद्ध के लिये दो हजार रुपये तक का हो सकेगा, दंडनीय होगा।

#### ग्यारहवां अध्याय - नियम तथा विनियम

##### नियम बनाने की शक्ति

51. (1) राज्य सरकार, अधिसूचना द्वारा, इस अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिये नियम बना सकेगी।
- (2) विशिष्ट तथा पूर्वगामी शक्ति की व्यापकता पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, ऐसे नियमों में निम्नलिखित समस्त विषयों या उनमें से किसी भी विषय के लिये उपबंध हो सकेगे, अर्थात्:-
- (क) धारा 3 की उपधारा (2) के अधीन परिषद् के अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष के निर्वाचन की रीति,
- (ख) धारा 4 के अधीन सदस्य के निर्वाचन का ढंग,
- (ग) अध्यक्ष, उपाध्यक्ष तथा सदस्यों का त्याग पत्र,
- (घ) धारा 8 के प्रयोजनों के लिये सम्मिलित करने की रीति,
- (ङ) परिषद् तथा उसकी समितियों के सम्मिलनों का समन किया जाना तथा किया जाना, समय तथा स्थान जहां कि ऐसे सम्मिलन किये जाने हों, उनमें किये जाने वाले कामकाज का संचालन तथा उनमें की गई कार्यवाहियों के कार्यवृत्त का रखा जाना और समितियों के सम्मिलनों में गणपूर्ति करने के लिये आवश्यक सदस्य संख्या,
- (च) धारा 15 के अधीन अध्यक्ष, उपाध्यक्ष या सदस्य को दिया जाने वाला पारिश्रमिक या भत्ता,
- (छ) (एक) तारीख जिसके पूर्व, अंतराल जिन पर तथा रीति जिसमें परिषदों के लेख धारा 17 की उपधारा (1) के अधीन तैयार किये जायेंगे,

made thereunder shall, on conviction be punishable with fine which may extend to one thousand rupees on first conviction and if the persons so contravening is an association every member of such association who knowingly or willingly authorises or permits the contravention shall be conviction be punishable with fine which may extend to one thousand rupees on the first conviction and two thousand rupees for every subsequent conviction.

#### CHPETER XI - RULES AND REGULATION

##### Power to make rules

- 51.(1)The State Government may, by notification, make rules for carrying out the purposes of this Act.
- (2) In particular, and without prejudice to the generality of the foregoing power such rule may provide for all or any of the following matters, namely :-
- (a) the manner of election of the President and Vice President of the Council under sub section (2) of section 3;
- (b) the mode of election of members under sections 4;
- (c) the resignation of President, Vice President and members.
- (d) the manner of holding meeting for the purpose of section 8;
- (e) the summoning and holding of meetings of the Council and the committees thereof the times and places where such meetings are to be held and the conduct of the business and maintenance of the minutes of the proceedings thereat and the number of member necessary to constitute a quorum at the meetings of the committees.
- (f) the remuneration or allowance to be granted to president, Vice President or member under section 15;
- (g) (i) the date before which the intervals at which and the manner in which, the account of Council shall be prepared under sub-section (1) of section 17:

(दो) रीति जिसमें संपरीक्षित लेखाओं की प्रतिलिपि, धारा 17 की उपधारा (3) के अधीन राज्य सरकार को प्रस्तुत की जायेगी ,

(ii) the manner of submission of copy of audited accounts to the State Government under Sub-section (3) of section 17;

(ज) (एक) प्रारूप जिसमें धारा 18 की उपधारा (1) के अधीन बजट तैयार किया जायेगा और समय , जब तथा रीति जिसमें वह बजट परिषद् के समक्ष रखा जायेगा,

(h) (i) the form in which the budget shall be prepared under sub section (1) of section 18 and the time of which and the manner in which the same shall be laid before the council ;

(दो) प्रारूप जिसमें तथा तारीख जिस तक धारा 18 की उपधारा (4) के अधीन अनुपूरक बजट तैयार किया जायेगा ।

(ii) the form in which and the date by which the supplementary budget shall be prepared under sub -section (4) of section 18;

(झ) धारा 19 के अधीन रजिस्ट्रार का काडर , उसकी अर्हतायें , उसका वेतन तथा भत्ते और अन्य निबन्धन तथा शर्तें एवं अनुशासनिक नियंत्रण और अपील करने का अधिकार ,

(i) The cadre qualifications, salary and allowances and other terms and conditions and the disciplinary control and right of appeal of the Registrar under section 19 ;

(ञ) परिषद् के ऐसे अधिकारियों तथा सेवकों की, जो रजिस्ट्रार से भिन्न हों, संथा , उनका काडर उनकी अर्हतायें, उनकी रती , उनके वेतन, उनके भत्ते तथा उनकी सेवा के अन्य निबन्धन एवं शर्तें जिनके अंतर्गत अनुशासनिक नियंत्रण और अपील का अधिकार आता है, जो कि धारा 20 के अधीन विहित की जानी है ।

(j) the number cadre qualifications recruitment salary allowances and other terms and conditions of service including disciplinary control and right of appeal of the officers and servants of the Council other than the Registrar to be prescribed under section 20 ;

(ट) (एक) रीति जिसमें धारा 1 की उपधारा (1) के अधीन रजिस्टर रखा जायेगा ,

(k) (i) the manner in which the register shall be maintained under sub - section (1) of section 21;

(दो) रीति जिसमें धारा 21 की उपधारा (2) के अधीन रजिस्टर प्रकाशित किया जायेगा ।

(ii) the manner in which the register shall be published under sub-section (2) of section 21;

(ठ) (एक) फीस तथा वह प्रारूप जिसमें धारा 22 की उपधारा (1) के अधीन आवेदन किया जायेगा ।

(l) (i) the fee and the form in which the application shall be made under sub - section (1) of section 22 ;

(दो) रीति जिसमें धारा 22 की उपधारा (2) के अधीन फीस तथा उस फीस का संदाय करने की रीति,

(ii) the fee and the manner of payment of fee under sub -section (2) of section 22;

(तीन) प्रारूप, जिसमें धारा 22 की उपधारा (3) के अधीन रजिस्ट्रीकरण का प्रमाण पत्र दिया जायेगा ।

(iii) the form in which certificate of registration shall be given under sub-section (3) of section 22,

(ड) रीति जिसमें धारा 25 की उपधारा (1) के अधीन जांच की जायेगी ,

(m) the manner in which inquiry shall be held under sub - section (1) of section 25;

(ढ) धारा 35 की उपधारा (2) के अधीन नियुक्त किये जाने वाले निरीक्षकों की संख्या, उनका काडर , इनकी अर्हताएं, इनकी भर्ती, उनका वेतन, उनके भत्ते तथा उनकी सेवा के अन्य निबंध एवं शर्तें जिनके अंतर्गत अनुशासनिक नियंत्रण और अपील का अधिकार आता है ।

(n) the number cadre qualifications recruitment salary allowances and other terms and condition of service including disciplinary control and right of appeal of the inspectors to be appointed under the sub section (2) of section 35 ;

(ण) कालावधि, जिसके भीतर तथा रीति जिसमें, धारा 48 के अधीन अपील की जायेगी और फीस जो ऐसी अपील के साथ दी जायेगी,

(त) कोई अन्य विषय जो इस अधिनियम, द्वारा विहित किया जाना हो या विहित किया जाय या इस अधिनियम के अधीन बनाये गये नियमों द्वारा उपबन्धित किया जाना हो या उपबन्धित किया जाय।

3. इस अधिनियम के अधीन बनाये गये नियम विधान सभा के पटल पर रखे जायेंगे।

### विनियम बनाने की शक्ति

52. (1) परिषद् साधारणतः इस अधिनियम के प्रयोजनों को कार्यान्वित करने के लिये राज्य सरकार की पूर्व मंजूरी से, इस अधिनियम तथा उसके अधीन बनाये गये नियमों के उपबन्धों के अधीन रहते हुए, विनियम बना सकेगी तथा ऐसे विनियमों में, इस शक्ति की व्यापकता पर प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, निम्नलिखित के लिये उपबन्ध हो सकेंगे :-

(क) परिषद् की कार्यकारिणी समिति तथा अन्य समितियों के लिये सदस्यों का निर्वाचन।

(ख) कार्यकारिणी समिति की शक्तियों तथा उसके कर्तव्य,

(ग) परिषद् की शक्तियां तथा उसके कर्तव्य, जो धारा 10 के अधीन अध्यक्ष को प्रदत्त की जानी हैं तथा उस पर अधिरोपित किये जाने हो।

(घ) रीति, जिसमें धारा 26 के अधीन रजिस्ट्रीकृत व्यवसायियों की सूची प्रकाशित की जायेगी।

(ङ) धारा 32 के अधीन प्रशिक्षण तथा अर्हक परीक्षाओं के लिये अध्ययन पाठ्यक्रम और ऐसी परीक्षा में संस्था के विद्यार्थियों के प्रवेश की शर्तें तथा परीक्षा

(च) परीक्षकों की नियुक्ति की शर्तें तथा परीक्षाओं के संचालन से संबंधित समस्त विषय जिनके अंतर्गत पारिश्रमिक तथा अन्य व्यय आते हैं।

(छ) मान्यता प्राप्त संस्थाओं अध्यापकों की संख्या, अर्हताएं तथा उनकी उपलब्धियां और प्रत्येक संस्था में अध्ययन - पाठ्यक्रमों के लिये प्रभारित की जाने वाले फीस,

(ज) संस्थाओं को मान्यता देने की शर्तें और ऐसी संस्थाओं में शिक्षा के स्तर को बनाये रखना।

(o) the period within which and the manner in which the appeal shall be preferred under section 48 and the fee which shall accompany such appeal;

(p) any other matter which is to be or may be prescribed by or provided for by rules made under this Act;

(3) The rules made under this Act shall be laid on the table of the legislative assembly.

### Power to make regulations

52.(1) Subject to the provisions of this Act and rules power to make regulations made thereunder the council may, with the previous sanction of the State Government, make regulations generally to carry out the purposes of this Act and without prejudice to the generality of this power such regulations may provide for -

(a) the election of members to the Executive Committee and other Committees of the Council;

(b) the powers and duties of the Executive Committee;

(c) the powers and duties of the Council to be conferred on the president under section 10;

(d) the manner in which the list of registered practitioners shall be published under section 26;

(e) the courses of study for training and qualifying examinations and the conditions of admission of students of the institutions and the examination under section 32;

(f) the conditions of appointment of examiners and all matters related with conduct of examinations, including remuneration and other expenses;

(g) the number, qualification and emoluments of teachers of the recognised institutions and the fees to be charged for the course of study in each institution;

(h) conditions of recognition of institutions and maintenance of standard of education in such institution;

- (इ) शर्तें जिनके अधीन रहते हुए, वृत्तिकार्यों, छात्रवृत्तियां, पारितोषिक तथा पदक मंजूर किये जायेंगे।
- (ज) कोई भी विषय, जिसके लिये इस अधिनियम के अधीन उपबन्ध विनियम द्वारा किया जाये।
- (2) राज्य सरकार, विनियमों को, जब कि वे मंजूरी के लिये प्राप्त हो जाये, ऐसे उपान्तरणों के अधीन जैसे कि वह उचित समझे मंजूर कर सकेगी या उन पर और आगे विचार करने के लिये उन्हें परिषद् को वापस कर सकेगी।
- (3) समस्त विनियम "राजपत्र" में प्रकाशित किये जायेंगे।
- (4) राज्य सरकार, अधिसूचना द्वारा, किसी भी विनियम को निरस्त कर सकेगी।

- (i) the conditions subject to which stipends, scolarship, prizes and medals shall be granted;
- (j) any matter for which under thi Act provision may be made by regulation.
- (2) The State Govrnment, on receiving regulatıons for sanction may sanction them subject to such modifications as it may think fit or return them to the council for further consideration.
- (3) All regulations shall be published in the Gazettee.
- (4) The State Government may, by notification cancel any regulation .

**बारहवां अध्याय - व्यावृत्ति**  
**व्यावृत्ति**

**CHAPTER XIL - SAVING**  
**Savings**

53. छत्तीसगढ़ होमियोपैथी एण्ड बायोकेमिकल प्रैक्टिशनर्स एक्ट, 1951 (क्रमांक 26 सन् 1951) का निरसन हो जाने पर भी, उन व्यक्तियों को, जिनके कि - नाम निरस्त एक्ट की धारा 18 के अधीन रखी गई सूची में दर्ज है, राज्य में होमियोपैथी चिकित्सा व्यवसाय करने के संबंध में, वे ही अधिकार प्राप्त रहेंगे, जो कि उन्हें निरसित एक्ट के अधीन प्राप्त थे।

53. Notwithstanding the repeal of the Madhya Pradesh Homoeopathic and Biochemic Practitioners Act, 1951 (No. 26 of 1951), persons whose names are borned on the list maintained under section 18 to the repealed Act shall continue to have the same rights as in respects of practising Homoeopathy in the State as they had under the repealed Act.

**तेरवां अध्याय - अस्थायी उपबन्ध**  
**अस्थायी उपबंध**

**CHAPTER XIII. TRANSITORY PROVISIONS**  
**Transitory Provisions**

54. परिषद् निरसित एक्ट के अधीन बनाये गये नियमों तथा विनियमों में, राज्य सरकार के पूर्व अनुमोदन से, ऐसे उपान्तरण कर सकेगी जिन्हें कि वह इस अधिनियम के उपबंधों को कार्यान्वित करने के प्रयोजन के लिये उचित समझे और इस प्रकार उपान्तरित किये गये नियम या विनियम तब तक प्रवृत्त बने रहेंगे जब तक कि वे इस अधिनियम के अधीन बनाये गये नियमों या विनियमों द्वारा निरसित न कर दिये जाये।

54. The Council may, with preivous approval of the State Government, make such modifications in the rule and regulations made under the repealed Act as it may deem fit for the purpose of carrying into effect the provisions of this Act and the rules or regulations as so modified shall remain in force till such time they are repealed by rules or regulations made under this Act.

**कठिनाईयों को दूर करने की शक्ति**

**Power to remove difficulties**

55. यदि इस अधिनियम के उपबन्धों को प्रभावशील करने में कोई कठिनाई उद्भूत हो, तो राज्य सरकार ऐसे आदेश द्वारा जो इस अधिनियम के उपबन्धों से असंगत न हो, उस कठिनाई को दूर कर सकेगी।

55. If any difficulty arises in giving effect to the provisions of this Act, the State Government may, be order, not in consistent with the provisions of this Act, remove the difficulty.

**Repeal**

56. मध्यप्रदेश होमियोपैथी परिषद् अध्यायदेश 1975 (क्रमांक 13 सन् (निरसन) 1975) एतद् द्वारा निरस्त किया जाता है।

56. The Madhya Pradesh Homoeopathy Council Adhyadesh, 1975 (No. 13 of 1975) is hereby repealed.

  
**REGISTRAR,**  
**S.C.H; RAIPUR**

छत्तीसगढ़ राजपत्र, दिनांक 18 दिसंबर 1976

भाग 4 § ग §

अंतिम नियम

लोक स्वास्थ्य एवं परिवार नियोजन विभाग

छत्तीसगढ़, दिनांक 12 अक्टूबर 1976.

क्र. 4147-सत्रह-मेडी.-4. छत्तीसगढ़ होमियोपैथिक परिषद अधिनियम 1976 क्रमांक 19, सत्र 1976, की धारा 21, 22, 26 तथा 48 के साथ पठित धारा 51 की उपधारा 2 के खंड (क), (ख), (ग) तथा (घ) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, राज्य शासन, सतद द्वारा निम्न लिखित नियम बनाता है, अर्थात् :-

नियम

अध्याय एक - प्रारंभिक

1. संक्षिप्त नाम.- ये नियम, छत्तीसगढ़ होमियोपैथिक परिषद रजिस्टर का प्रकाशन तथा अपील § नियम, 25.5-2001 कहलायेंगे.

2. परिभाषाएँ.- इन नियमों से जब तक संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो, -

§क§ अधिनियम से अभिप्रेत है, छत्तीसगढ़ होमियोपैथी परिषद, अधिनियम, 1976 § क्रमांक 19, सत्र 1976 §;

§ख§ "प्रारूप" से अभिप्रेत है, इन नियमों से संलग्न प्रारूप ;

§ग§ "धारा" से अभिप्रेत है, अधिनियम की धारा ;

§घ§ "वर्ष" से अभिप्रेत है, अंग्रेजी वर्ष.

अध्याय दो-रजिस्ट्रीकरण

3. राज्य होमियोपैथी रजिस्टर - §1 § रजिस्टर एवं प्रारूप अ में होगा.

§2 § रजिस्टर का प्रत्येक पृष्ठ रजिस्ट्रार द्वारा सत्यापित तथा हस्ताक्षरित किया जावेगा.

§3 § रजिस्ट्रीकृत चिकित्सा व्यवसायी के पते में हुए किसी भी परिवर्तन की सूचना रजिस्ट्रीकृत चिकित्सा व्यवसायी द्वारा रजिस्ट्रार को दी जायेगी और रजिस्ट्रार परिवर्तित पते को रजिस्टर में तदनुसार प्रविष्ट करेगा :-

4. रजिस्ट्रार का प्रकाशन :- रजिस्ट्रार प्रत्येक पांच वर्ष रजिस्ट्रार को पुनरीक्षित करेगा तथा उसमें निम्नलिखित बातों की प्रविष्टि करेगा :-

१. एक ॥ पहले से ही रजिस्ट्रीकृत चिकित्सा-व्यवसायियों की संख्या;
  २. दो ॥ रजिस्ट्रार के पुनरीक्षण के पूर्व पांच वर्ष की अवधि के दौरान, रजिस्ट्रीकृत चिकित्सा-व्यवसायियों की संख्या.
  ३. तीन ॥ उन चिकित्सा-व्यवसायियों की संख्या जिनके नाम, रजिस्ट्रार के पुनरीक्षण के पूर्ववर्ती पांच वर्षों की अवधि के दौरान रजिस्ट्रार में पुनः रखे गये हों;
  ४. चार ॥ उन चिकित्सा व्यवसायियों की संख्या जिनके नाम, रजिस्ट्रार के पुनरीक्षण के पूर्ववर्ती पांच वर्षों की अवधि के दौरान, रजिस्ट्रार में अधिनियम की रक्त उपधारा तथा धारा का उल्लेख करते हुए हटा दिये गये हों, जिसके अधीन, नाम हटाये गये हों, तथा
  ५. पांच ॥ उन चिकित्सा-व्यवसायियों की संख्या, जिनके नाम के रजिस्ट्रार के पुनरीक्षण के पूर्ववर्ती पांच वर्षों की अवधि दौरान मृत्यु हो जाने के कारण हटा दिये गये हों.
2. प्रथम रजिस्ट्रार. प्रथम परिषद् की गठन की तारीख से 3 वर्ष के पश्चात् 180 दिनों के भीतर "उत्तीसगढ़ राजपत्र" में प्रकाशित किया जायेगा.
  3. पुनरीक्षित रजिस्ट्रार. रजिस्ट्रार के पुनरीक्षण के पूर्ववर्ती पांच वर्षों की अवधि पूरी होने के पश्चात्-दिनों के भीतर "उत्तीसगढ़ राजपत्र" में प्रकाशित किया जायेगा और पुनरीक्षण से प्रतिकूल रूप से प्रभावित चिकित्सा-व्यवसायियों को उनके प्रतिकूल रूप से प्रभावित होने की सूचना रजिस्ट्रीकृत डाक से दी जायेगी.
  4. इस प्रकार प्रकाशित, यथास्थिति, प्रथम रजिस्ट्रार या पुनरीक्षित रजिस्ट्रार की एक प्रति परिषद् के सूचना फलक पर चिपकायी जायेगी.
  5. रजिस्ट्रार की मुद्रित प्रतियां, परिषद् द्वारा निश्चित मूल्य पर बिक्की के लिए उपलब्ध कराई जा सकेंगी.
  6. रजिस्ट्रार अपने पास रजिस्ट्रार की एक अतः पत्र वाली मुद्रित प्रति रखेगा, जिसमें वह प्रत्येक वर्ष के दौरान ऐसी कोई भी प्रविष्टि, परिवर्तन या विलोप करेगा, जो आवश्यक हो.
5. रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन-पत्र तथा फीस- १। १ धारा 22 की उपधारा १। १ के अधीन-रजिस्ट्रीकरण का आवेदन पत्र प्रारूप "अ" में होगा और उसके साथ एक सौ रुपये की फीस के भुगतान का संतोषप्रद प्रमाण तथा मान्यता प्राप्त अर्हताओं के प्रमाण पत्र की किसी मजिस्ट्रेट या किसी राजपत्रित अधिकारी द्वारा सम्यक् रूप से अभिप्रमाणित सत्यप्रतिलिपि संलग्न की जायेगी. आवेदक अपने आवेदन पत्र के समर्थन में ऐसे अन्य प्रमाण-पत्रों, तथा दस्तावेजों की अभिप्रमाणित प्रतियां भी संलग्न कर सकेगा जो वह आवश्यक समझे और रजिस्ट्रार, आवेदक से ऐसे अन्य प्रमाण-पत्र तथा प्रमाण लेख १ टेस्टीमोनियल १ या मूल प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करने के लिए कह सकेगा, जिसका सत्यापन करना आवश्यक समझे.
  6. रजिस्ट्रीकरण जारी रखने के लिए आवेदन पत्र तथा फीस :- १। १ धारा 22 की उपधारा १। 2 के अधीन रजिस्ट्रीकृत चिकित्सा व्यवसायी का नाम प्रविष्टि करने की फीस पचास रुपये होगी ।

§2॥ धारा 22 की उपधारा §2॥ के प्रथम परन्तुक के अधीन रजिस्ट्रीकृत विधिकार-व्यवसायी का नाम पुनः प्रविष्ट करने का आवेदन पत्र स्वयं रजिस्टर से उसका नाम हटाने की तारीख से तीन वर्ष की अवधि के भीतर दिया जायेगा और नाम पुनः प्रविष्ट करने की अतिरिक्त फीस प्रत्येक तीन माह के लिए पांच रुपये तथा कुल मिलाकर पचास रुपये से अधिक होगी। ऐसे आवेदन-पत्र के साथ धारा 53 के अधीन निरस्त अधिनियम के अधीन जारी किया गया मूल प्रमाण पत्र दिया जायगा।

7- रजिस्ट्रीकरण का प्रमाण पत्र- धारा 22 की उपधारा §3॥ के अधीन रजिस्टर का प्रमाण-पत्र प्ररूप ई में होगा और धारा 24 के अधीन रजिस्ट्रीकरण का अंतिम प्रमाण-पत्र प्ररूप "उ" में होगा।

8- फीस के भुगतान का तरीका- धारा 22 की उपधारा §2॥ के अधीन देय फीस का भुगतान मनोभाईर रेखित § क्रास्टु § पोस्टल आर्डर या नकद में किया जा सकेगा। यदि फीस का भुगतान नकद में किया जाए, तो रजिस्ट्रार से उसकी रसीद प्राप्त की जायेगी।

अध्याय तीन - अपीलें

9- अपील का ज्ञापन- अधिनियम के अधीन प्रत्येक अपील :-

§क॥ उस आदेश की संसूचना की तारीख से पैतालिस दिनों के भीतर फाइल की जायेगी, जिसके विरुद्ध अपील फाइल की जानी हो;

§ख॥ उसके साथ दस रुपये की फीस का भुगतान का संतोषपद प्रमाण दिया जायगा ;

§ग॥ लिखित रूप में होगी ;

§घ॥ उसमें आवेदक के नाम तथा पते का उल्लेख होगा;

§ङ॥ उसमें उस आदेश की तारीख का उल्लेख होगा, जिसके विरुद्ध अपील फाइल की जानी हो।

§च॥ उसमें उस तारीख का उल्लेख होगा, जब आवेदक को आदेश की संसूचना दी गई हो।

§छ॥ उसमें स्पष्ट तथ्य कथन होगा।

§ज॥ उसमें आदी दत अनुतोष का ठीक-ठीक उल्लेख होगा; और

§झ॥ उस पर अपीलार्थी द्वारा या इस संबंध में उसके द्वारा लिखित

रूप में सम्यक् रूप से प्राधिकृत एजेंट द्वारा हस्ताक्षर किये जायेंगे तथा निम्नलिखित रूप में उसे स्थापित किया जायेगा, अर्थात् :-

" मैं ..... उपर्युक्त अपील के ज्ञापन में नामोल्लिखित अपीलार्थी, एतद द्वारा, घोषित करता हूँ कि उसमें दी गई जानकारी मेरे सर्वोत्तम ज्ञान एवं विषयानुसार सत्य है"

हस्ताक्षर

§2॥ अपील के ज्ञापन के साथ उस आदेश की प्रमाणीकृत प्रति लगायी जायेगी जिसके विरुद्ध अपील की गई हो, जब तक कि अपीलार्थी अपील प्रस्तुत करते समय अपीलार्थी प्राधिकारी का इस बात से समाधान न कर दे किबोप का पर्याप्त कारण है और ऐसी स्थिति में उसे ऐसे समय के भीतर फाइल किया जायेगा,

§38 अपील का ज्ञापन दो प्रतियों में होगा और वह अपीलीय प्राधिकारी को या तो अपीलार्थी द्वारा या उसके एजेंट द्वारा प्रस्तुत किया जायेगा। वह उसे प्राधिकारी को रजिस्ट्रीकृत डाक द्वारा भेजा जायेगा। जब अपील, अपीलार्थी द्वारा सम्यक् रूप से प्राधिकृत किसी एजेंट द्वारा प्रस्तुत की जाय, तब उसके साथ उसको इस प्रकार नियुक्त करने का सम्यक् रूप से मुद्रांकित प्राधिकार पत्र लगाया जायगा।

10. अपील को संक्षिप्ततः अस्वीकार करना-§11 यदि अपील का ज्ञापन नियम 9 की सभी या किन्हीं भी अपेक्षाओं की पूर्ति न करता हो, तो अपील संक्षिप्ततः अस्वीकृत की जा सकेगी।

परंतु, इस उपनियम के अधीन कोई भी अपील तब तक संक्षिप्ततः अस्वीकृत नहीं की जायेगी, जब तक अपीलार्थी को ऐसी अपील के ज्ञापन में संशोधन करने के ऐसे अवसर, जिन्हें अपीलीय प्राधिकारी उपयुक्त समझे; प्रदान करके दिये जायें, जिससे कि वह नियम, 9 की अपेक्षाओं के अनुस्यू किया जा सके।

§28 अपील किसी ऐसे अन्य कारण से भी संक्षिप्ततः अस्वीकृत की जा सकेगी, जब अपीलीय प्राधिकारी द्वारा अभिलिखित किया जायेगा।

परंतु इस उपनियम के अधीन अपील को संक्षिप्ततः अस्वीकृत करने वाला आदेश पारित करने से पूर्व अपीलार्थी को सुनवाई का समुचित अवसर दिया जायगा।

§11 अपील की सुनवाई - §11 यदि अपीलीय प्राधिकारी अपील संक्षिप्ततः अस्वीकृत न करें, तो वह अपीलार्थी या उसके सम्यक् रूप से प्राधिकृत एजेंट की सुनवाई की तारीख निश्चित करेगा।

§28 उपर्युक्त प्राधिकारी, किसी भी अवस्था पर अपील की सुनवाई को किसी अन्य तारीख के लिए स्थगित कर सकेगा।

§38 यदि सुनवाई के लिए निश्चित तारीख को या ऐसी किसी अन्य तारीख

को जिसके लिए सुनवाई स्थगित कर दी गई हो, अपीलार्थी उक्त प्राधिकारी के समक्ष या तो व्यक्तिगत रूप से या अपीलार्थी द्वारा सम्यक् रूप से प्राधिकृत एजेंट के जरिये उपस्थित न हो, तो उक्त प्राधिकारी अपील को खारिज कर सकेगा या उस पर एकतरफा निर्णय कर सकेगा, जैसा भी वह उचित समझे।

§48 जब उप-नियम §38 के अधीन अपील खारिज की जाये या उस पर एकतरफा निर्णय दिया जाये, तब अपीलार्थी ऐसे आदेश को सूचना की तारीख से ..... दिन के भीतर अपीली प्राधिकारी को अपील के पुनर्ग्रहण या पुनः सुनवाई के लिए आवेदन कर सकेगा और यदि अपीली प्राधिकारी का इस बात से समाधान हो जाये कि अपीलार्थी या सम्यक् रूप से प्राधिकृत एजेंट को उस समय जब अपील पर सुनवाई के लिए बुलाया गया था, उपस्थित होने से समुचित कारण से रोक दिया गया था, तो वह अपील को व्यय तथा शर्तों संबंधी निबंधनों सहित ऐसे निबंधनों पर, जैसा वह उचित समझे, पुनः ग्रहण कर सकेगा या पुनः सुन सकेगा।

12. अपील में पारित आदेश की प्रति की पूर्ति - अपील में पारित आदेश की एक प्रति अपीलार्थी को निशुल्क दी जायेगी और उसकी दूसरी प्रति उस प्राधिकारी को भेजी जायेगी, जिसने आदेश पारित किया है।



प्ररूप "अ"

नियम 3 § 1 § देखिये §

उत्तीसगढ़ राज्य हो पैंपैयिक रजिस्ट्रार

रजिस्ट्रीकरण क्रमिक नाम	तथा पता/धरि का नाम	पता	विवाकल्य	व्यक्तसाय का स्थान
1	2	3	4	

आयु तथा जन्म वह धारा, जिसके अधीन अर्हताये तथा जिन्हें प्राप्त करने की तारीख	रजिस्ट्रीकरण किया गया तारीख और विश्वविद्यालय या स्थान	रजिस्ट्रीकरण की तारीख मण्डल आदि का नाम
5	6	7

धारा 22 की उपधारा § 2 § के अधीन किये गये	रजिस्ट्रार के हस्ताक्षर नवीनीकरण की तारीख तथा फीस	अभ्युक्ति
	8	9 10

प्रश्न "अ"

§ नियम 5 §1 § देखें

छत्तीसगढ़ होमियोपैथी परिषद अधिनियम, 2001 की धारा  
22 की उपधारा §1 § के अधीन रजिस्ट्रीकरण के आवेदन-पत्र  
का प्रारूप

प्रति,

रजिस्ट्रार

राज्य होमियोपैथी परिषद

छत्तीसगढ़, रायपुर

महोदय,

निवेदन है कि मेरा नाम छत्तीसगढ़ होमियोपैथी परिषद अधिनियम 2001  
के अधीन रखे गये राज्य होमियोपैथी रजिस्टर में प्रविष्ट किया जाये और मुझे  
रजिस्ट्रीकरण प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाए, आवश्यक विशिष्टियां नीचे दी गई हैं।

1. पूरा नाम § स्पष्ट अक्षरों में §

§ विवाहित महिला के मामले में विवाह के पूर्व का भी नाम §

2. पिता/पति का नाम

3. निवास स्थान का पता

§ मकान क्रमांक, मोहल्ला, हाकधर, नगर/ग्राम, जिला §

4. व्यवसायिक नियुक्ति, यदि कोई हो

5. व्यावसायिक पता/व्यवसाय का/के स्थान और प्रत्येक स्थान का व्यवसाय  
काल.

6. आयु तथा जन्म तारीख

7. §क§ अर्हता § अधिनियम के अधीन मान्य §

§ख§ ऐसी अर्हता प्राप्त करने की तारीख

§ग§ विश्वविद्यालय/मंडल/संस्था

§घ§ ऐसे प्रशिक्षण का स्थान तथा अवधि

टिप्पणी :- कृपया, किसी मजिस्ट्रेट या किसी राषट्रिय अधिकारी द्वारा सम्यक्  
रूप से अभिप्रमाणित प्रमाण-पत्र या अर्हताओं के दस्तावेजों तथा मैट्रिक्यु-  
लेशन/उ. मा. शा. प्रमाण-पत्र की सत्यप्रतियां लगाये.

100 रुपये की विहित फीस नगद /पोस्टल आर्डर/मनीआर्डर द्वारा प्रेषित  
की जाती है. देखिये रसीद क्रमांक..... दिनांक.....

मैं निष्ठापूर्वक घोषित करता हूँ कि उपर्युक्त सभी प्रविष्टियां मेरे सर्वोत्तम  
ज्ञान एवं विश्वास के अनुसार सही हैं.

भवदीय,

स्थान .....

.....  
रजिस्ट्रार के कार्यालय

तारीख .....

राज्य होमियोपैथी परिषद्, छत्तीसगढ़

रसीद क्रमांक  
तथा रसीद की तारीख

रजिस्ट्रार का आदेश

प्राप्तकर्ता अधिकारी के हस्ताक्षर      रजिस्ट्रार के हस्ताक्षर

प्राप्त्य "इ"

§नियम 6 §2§ देखिये§

छत्तीसगढ़ होमियोपैथी परिषद् अधिनियम, 2001 की धारा 22 की उपधारा §2§ के प्रथम परंतुक के अधीन राज्य होमियोपैथी रजिस्ट्रार में नाम पुनर्प्राविष्ट करने के लिए आवेदन-पत्र का प्राप्त्य

प्रति,

रजिस्ट्रार

राज्य होमियोपैथी परिषद्, छत्तीसगढ़ रायपुर

महोदय,

निवेदन है कि मेरा नाम छत्तीसगढ़ होमियोपैथिक परिषद् अधिनियम 2001 की धारा 22 की उपधारा §2§ के प्रथम परंतुक के अधीन राज्य होमियोपैथी रजिस्ट्रार में पुनर्प्राविष्ट किया जाय. मैं मध्यप्रदेश होमियोपैथी तथा बायो-केमिक प्रेक्टिशनिर्स एक्ट, 1976 के अधीन रजिस्ट्रीकृत व्यवसायी था. आवश्यक प्राविष्टियां नीचे दी गई है :-

- 1. मध्यप्रदेश होमियोपैथी तथा बायोकेमिक .....  
प्रेक्टिशनिर्स एक्ट , 1951 § अब निस्तुत § के  
अधीन रजिस्ट्रीकरण ..... क्रमांक.
- 2. पूरा नाम स्पष्ट अक्षरों में § विवाहित .....  
महिला के मामले में विवाह से पूर्व का भी  
नाम §
- 3. पिता/पति को नाम .....
- 4. निवास-स्थान का पता § मकान क्रमांक, .....  
मुहल्ला, डाकघर, नगर, ग्राम, जिला आदि §
- 5. व्यवसायिक नियुक्ति, यदि कोई हो .....
- 6. व्यावसायिक पता/व्यवसाय का/के स्थान .....

7. आयु तथा जन्म तारीख .....
8. निरस्त अधिनियम की वह उपधारा तथा .....
- धारा, जिसके अधीन रजिस्ट्रीकृत हो.
9. क. अर्हता, यदि धारा 16 §1§ के .....
- अधीन रजिस्ट्रीकृत हो.
- ख. ऐसी अर्हता प्राप्त करने की तारीख .....
- ग. विश्वविद्यालय/मंडल/संस्था .....
- घ. ऐसे प्रशिक्षण का स्थान तथा अवधि .....

टिप्पणी :- कृपया किसी मजिस्ट्रेट या किसी रापीत्रत अधिकारी द्वारा सम्यक् रूप से अभ्यमानित उपाधि या पत्रोपाधि के प्रमाण पत्र की सत्यप्रति लगायें §

..... रुपये की रकम § 50 रुपये की विहित फीस और प्रति माह 5 रुपये के हिसाब से ..... माह की ..... रु. की अतिरिक्त फीस § नकद/पोस्टल आर्डर/मनीआर्डर द्वारा प्रेषित की जाती है. देखिये रसीद क्रमांक ..... दिनांक .....

मैं निष्ठापूर्वक घोषित करता हूँ कि उपर्युक्त सभी प्रविष्टियां मेरे सर्वोत्तम ज्ञान एवं विश्वास के अनुसार सही है.

- सहपत्र 1.  
2.  
3.

स्थान .....  
दिनांक .....

भवदीय

.....  
§ आवेदक के हस्ताक्षर §

राज्य होमियोपैथी परिषद, छत्तीसगढ़  
रसीद क्रमांक .....

रसीद की तारीख .....

प्राप्तकर्ता लिपिक के हस्ताक्षर

रजिस्ट्रार का आदेश

.....  
रजिस्ट्रार के हस्ताक्षर

प्रारूप "डि"  
नियम 7 देखिए  
राज्य होमियोपैथी परिषद् छत्तीसगढ़  
परिषद् की मुहर  
रजिस्ट्रेशन प्रमाण पत्र

रजिस्ट्रेशन क्रमांक ..... तारीख .....

प्रमाण पत्र दिया जाता है कि श्री/श्रीमती .....  
पिता/पति का नाम ..... निवास स्थान .....  
जिला ..... छत्तीसगढ़ को छत्तीसगढ़ होमियोपैथी परिषद् अधि-  
नियम 2001 की धारा 22 के अधीन रजिस्ट्रीकृत चिकित्सा व्यवसायी के रूप में  
सम्यक् रूप में रजिस्ट्रीकृत कर लिया गया है.

इसके साक्ष्य स्वरूप यहाँ रजिस्ट्रार के हस्ताक्षर हैं तथा परिषद् की मुहर  
लगी है.

मुहर

रायपुर

तारीख

.....  
रजिस्ट्रार

ध्यान दें

राज्य होमियोपैथी परिषद् के अधिनियम 1976 की धारा के अधीन  
रजिस्ट्रीकृत व्यवसायी था के लिए निम्नलिखित आवश्यक दस्तावेजों नीचे  
दी गई है ।

RE ISTRAR,  
C.G.S.C.M; RAIPUR.

प्रत्य-र  
नियम-7 देखिये  
राज्य होमियोपैथी परिषद्  
छत्तीसगढ़

रजिस्ट्रीकरण का अनंतिम प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि श्री/श्रीमती .....  
पिता/पति का नाम ..... निवास स्थान .....  
जिला ..... को ..... परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात्  
छत्तीसगढ़ होमियोपैथी परिषद् अधिनियम, 2001 की धारा 24 के अधीन अनंतिम  
रजिस्ट्रीकरण स्वीकृत किया गया है. अनंतिम रजिस्ट्रीकरण रजिस्टर के अनुसार उसका  
रजिस्ट्रीकरण क्रमांक, अनंतिम क्रमांक ..... तारीख .....  
यह प्रमाण-पत्र तब तक बैध रहेगा, जब तक उसकी प्रशिक्षणावधि पूरी न हो जाये  
तथा/यदि उसे राज्य होमियोपैथी परिषद् के दीक्षांत समारोह में अर्हता प्रदान न कर  
दी जाये.

.....  
रजिस्ट्रार

मुहर :  
रायपुर .....  
तारीख .....

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल के नाम से तथा आदेशानुसार,

के. पी. श्रीवास्तव, उपसचिव

रायपुर, दिनांक 12 अक्टूबर 1976.

क्र. 4149 सत्रह में 4-भारत के संविधान के अनुच्छेद 348 के खंड 3 के  
अनुसरण में इस विभाग की अधिसूचना क्रमांक 4147, सत्रह-में 4, दिनांक 12  
अक्टूबर 1976 का अंग्रेजी अनुवाद राज्यपाल के प्राधिकार से स्तद द्वारा प्रकाशित  
किया जाता है.

छत्तीसगढ़ के राज्यपाल के नाम से तथा आदेशानुसार,

के. पी. श्रीवास्तव, उपसचिव

  
REGISTRAR,  
C.G.S.C.H. RAIPUR.

छत्तीसगढ़ राजपत्र, दिनांक 18 सितंबर 1976

भाग 4 § ग §

अंतिम नियम

लोक स्वास्थ्य एवं परिवार नियोजन विभाग

छत्तीसगढ़, दिनांक 12 अक्टूबर 1976.

क्र. 4147-सत्रह-मेडी.-4. छत्तीसगढ़ होमियोपैथिक परिषद अधिनियम 1976 क्रमांक 19, सन् 1976, की धारा 21, 22, 26 तथा 48 के साथ पठित धारा 51 की उपधारा 2 के खंड (क), (ख), (ग), तथा (घ) द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, राज्य शासन, एतद द्वारा निम्न लिखित नियम बनाता है, अर्थात् :-

नियम

अध्याय एक - प्रारंभिक

- 1. संक्षिप्त नाम.- ये नियम, छत्तीसगढ़ होमियोपैथिक परिषद § रजिस्टर का प्रकाशन तथा अपील § नियम, 25.5-2001 कहलायेंगे.
- 2. परिभाषाएँ.- इन नियमों से जब तक संदर्भ से अन्यथा अपेक्षित न हो, -
  - §क§ अधिनियम से अभिप्रेत है, छत्तीसगढ़ होमियोपैथी परिषद, अधिनियम, 1976 § क्रमांक 19, सन् 1976 §;
  - §ख§ "प्रारूप" से अभिप्रेत है, इन नियमों से संलग्न प्रारूप ;
  - §ग§ "धारा" से अभिप्रेत है, अधिनियम की धारा;
  - §घ§ "वर्ष" से अभिप्रेत है, अंग्रेजी वर्ष.

अध्याय दो-रजिस्ट्रीकरण

- 3. राज्य होमियोपैथी रजिस्टर - §1 § रजिस्टर खूब प्रसन्न अ में होगा.
  - §2 § रजिस्टर का प्रत्येक पृष्ठ रजिस्ट्रार द्वारा सत्यापित तथा हस्ताक्षरित किया जावेगा.
  - §3 § रजिस्ट्रीकृत चिकित्सा व्यवसायी के पते में हुए किसी भी परिवर्तन की सूचना रजिस्ट्रीकृत चिकित्सा व्यवसायी द्वारा रजिस्ट्रार को दी जायेगी और रजिस्ट्रार परिवर्तित पते को रजिस्टर में तदनुसार प्रविष्ट करेगा :-

4- रजिस्टर का प्रकाशन :- रजिस्टर प्रत्येक पांच वर्षों में रजिस्टर को पुनरीक्षित करेगा तथा उसमें निम्नलिखित बातों की प्रविष्टि करेगा :-

१. पहले से ही रजिस्ट्रीकृत चिकित्सा-व्यवसायियों की संख्या;
  २. रजिस्टर के पुनरीक्षण के पूर्व पांच वर्ष की अवधि के दौरान, रजिस्ट्रीकृत चिकित्सा-व्यवसायियों की संख्या.
  ३. उन चिकित्सा-व्यवसायियों की संख्या जिनके नाम, रजिस्टर के पुनरीक्षण के पूर्ववर्ती पांच वर्षों की अवधि के दौरान रजिस्टर में पुनः रखे गये हों;
  ४. उन चिकित्सा व्यवसायियों की संख्या जिनके नाम, रजिस्टर के पुनरीक्षण के पूर्ववर्ती पांच वर्षों की अवधि के दौरान, रजिस्टर में अधिनियम की उस उपधारा तथा धारा का उल्लेख करते हुए हटा दिये गये हों, जिसके अधीन, नाम हटाये गये हों, तथा
  ५. उन चिकित्सा-व्यवसायियों की संख्या, जिनके नाम के रजिस्टर के पुनरीक्षण के पूर्ववर्ती पांच वर्षों की अवधि दौरान मृत्यु हो जाने के कारण हटा दिये गये हों.
2. प्रथम रजिस्टर. प्रथम परिषद् की गठन की तारीख से 3 वर्ष के पश्चात् 180 दिनों के भीतर "उत्तीसगढ़ राजपत्र" में प्रकाशित किया जायेगा.
  3. पुनरीक्षित रजिस्टर. रजिस्टर के पुनरीक्षण के पूर्ववर्ती पांच वर्षों की अवधि पूरी होने के पश्चात्-दिनों के भीतर "उत्तीसगढ़ राजपत्र" में प्रकाशित किया जायेगा और पुनरीक्षण से प्रतिकूल स्थ से प्रभावित चिकित्सा-व्यवसायियों को उनके प्रतिकूल स्थ से प्रभावित होने की सूचना रजिस्ट्रीकृत डाक से दी जायेगी.
  4. इस प्रकार प्रकाशित, यथानीस्थित, प्रथम रजिस्टर या पुनरीक्षित रजिस्टर की एक प्रति परिषद् के सूचना फलक पर चिपकायी जायेगी.
  5. रजिस्टर की मुद्रित प्रतियां, परिषद् द्वारा निश्चित मूल्य पर बिक्री के लिए उपलब्ध कराई जा सकेंगी.
  6. रजिस्ट्रार अपने पास रजिस्टर की एक अतः पत्र वाली मुद्रित प्रति रखेगा, जिसमें वह प्रत्येक वर्ष के दौरान ऐसी कोई भी प्रविष्टि, परिवर्तन या विलोप करेगा, जो आवश्यक हो.
5. रजिस्ट्रीकरण के लिए आवेदन-पत्र तथा फीस-१।१ धारा 22 की उपधारा १।१ के अधीन-रजिस्ट्रीकरण का आवेदन पत्र प्रारूप "अ" में होगा और उसके साथ एक सौ रुपये की फीस के भुगतान का संतोषपत्र प्रमाण तथा मान्यता प्राप्त अर्हताओं के प्रमाण पत्र की किसी मजिस्ट्रेट या किसी राजपत्रित अधिकारी द्वारा सम्यक् रूप से अभिप्रमाणित सत्यप्रतिलिपि संलग्न की जायेगी. आवेदक अपने आवेदन पत्र के समर्थन में ऐसे अन्य प्रमाण-पत्रों, तथा दस्तावेजों की अभिप्रमाणित प्रतियां भी संलग्न कर सकेगा जो वह आवश्यक समझे और रजिस्ट्रार, आवेदक से ऐसे अन्य प्रमाण-पत्र तथा प्रमाण लेख "टेस्टीमोनियल" या मूल प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करने के लिए कह सकेगा, जिसका सत्यापन करना आवश्यक समझे.
  6. रजिस्ट्रीकरण जारी रखने के लिए आवेदन पत्र तथा फीस :- १।१ धारा 22 की उपधारा १।२ के अधीन रजिस्ट्रीकृत चिकित्सा व्यवसायी का नाम प्रविष्टि करने की फीस पचास रुपये होगी ।



§22 धारा 22 की उपधारा §22 के प्रथम परन्तुक के अधीन रजिस्ट्रीकृत चिकित्सा-व्यवसायी का नाम पुनः प्रविष्ट करने का आवेदन पत्र रजिस्ट्रार से उसका नाम हटाने की तारीख से तीन वर्ष की अवधि के भीतर दिया जायेगा और नाम पुनः प्रविष्ट करने की अतिरिक्त फीस प्रत्येक तीन माह के लिए पांच रुपये तथा कुल मिलाकर पचास रुपये से अनधिक होगी. ऐसे आवेदन-पत्र के साथ धारा 53 के अधीन निरस्त अधिनियम के अधीन जारी किया गया मूल प्रमाण पत्र दिया जायेगा.

7. रजिस्ट्रीकरण का प्रमाण पत्र- धारा 22 की उपधारा §22 के अधीन रजिस्ट्रार का प्रमाण-पत्र प्ररूप ई में होगा और धारा 24 के अधीन रजिस्ट्रीकरण का अंतिम प्रमाण-पत्र प्ररूप "ज" में होगा.

8. फीस के भुगतान का तरीका- धारा 22 की उपधारा §22 के अधीन देय फीस का भुगतान मनोआर्डर रेजिस्ट्रार को क्रास्ट पोस्टल आर्डर या नकद में किया जा सकेगा. यदि फीस का भुगतान नकद में किया जाए, तो रजिस्ट्रार से उसकी रसीद प्राप्त की जायेगी.

अध्याय तीन - अपीलें

9. अपील का ज्ञापन- अधिनियम के अधीन प्रत्येक अपील :-

§क. उस आदेश की संसूचना की तारीख से पैंतालिस दिनों के भीतर फाइल की जायेगी, जिसके विरुद्ध अपील फाइल की जानी हो;

§ख. उसके साथ दस रुपये की फीस का भुगतान का संतोष्य प्रमाण दिया जायेगा ;

§ग. लिखित रूप में होगी ;

§घ. उसमें आवेदक के नाम तथा पते का उल्लेख होगा;

§ङ. उसमें उस आदेश की तारीख का उल्लेख होगा, जिसके विरुद्ध अपील फाइल की जानी हो.

§च. उसमें उस तारीख का उल्लेख होगा, जब आवेदक को आदेश की संसूचना दी गई हो.

§छ. उसमें स्पष्ट तथ्य कथन होगा.

§ज. उसमें आवेदित अनुतोष का ठीक-ठीक उल्लेख होगा; और

§झ. उस पर अपीलार्थी द्वारा या इस संबंध में उसके द्वारा लिखित

रूप में सम्यक् रूप से प्राधिकृत एजेंट द्वारा हस्ताक्षर किये जायेंगे तथा निम्नलिखित रूप में उसे स्थापित किया जायेगा, अर्थात् :-

"मैं ..... उपर्युक्त अपील के ज्ञापन में नामोल्लिखित अपीलार्थी, एतद् द्वारा, घोषित करता हूँ कि उसमें दी गई जानकारी मेरे सर्वोत्तम ज्ञान एवं विषयानुसार सत्य है"

हस्ताक्षर

§22 अपील के ज्ञापन के साथ उस आदेश की प्रमाणीकृत प्रतिलिपि लगायी जायेगी जिसके विरुद्ध अपील की गई हो, जब तक कि अपीलार्थी अपील उपस्तुत करते समय अपीलार्थी प्राधिकारी का इस बात से समझाने न कर दे कि लोप का पर्याप्त कारण है और ऐसी स्थिति में उसे ऐसे समय के भीतर फाइल किया जायेगा,

§3§ अपील का ज्ञापन दो प्रतियों में होना और वह अपीलीय प्राधिकारी को या तो अपीलार्थी द्वारा या उसके एजेंट द्वारा प्रस्तुत किया जायेगा. वह उसे प्राधिकारी को रजिस्ट्रीकृत डाक द्वारा भेजा जायेगा. जब अपील, अपीलार्थी द्वारा सम्यक् रूप से प्राधिकृत किसी एजेंट द्वारा प्रस्तुत की जाय, तब उसके साथ उसको इस प्रकार नियुक्त करने का सम्यक् रूप से मुद्रांकित प्राधिकार पत्र लगाया जायेगा.

10. अपील को संक्षिप्ततः अस्वीकार करना - §1§ यदि अपील का ज्ञापन नियम 9 की सभी या किन्हीं भी अपेक्षाओं की पूर्ति न करता हो, तो अपील संक्षिप्ततः अस्वीकृत की जा सकेगी.

परंतु, इस उपनियम के अधीन कोई भी अपील तब तक संक्षिप्ततः अस्वीकृत नहीं की जायेगी, जब तक अपीलार्थी को ऐसी अपील के ज्ञापन में संशोधन करने के ऐसे अवसर, जिन्हें अपीलीय प्राधिकारी उपयुक्त समझे; प्रदान करके दिए जायें, जिससे कि वह नियम, 9 की अपेक्षाओं के अनुरूप किया जा सके.

§2§ अपील किसी ऐसे अन्य कारण से भी संक्षिप्ततः अस्वीकृत की जा सकेगी, यदि अपीलीय प्राधिकारी द्वारा अभिलिखित किया जायेगा.

परंतु इस उपनियम के अधीन अपील को संक्षिप्ततः अस्वीकृत करने वाला आदेश पारित करने से पूर्व अपीलार्थी को सुनवाई का समुचित अवसर दिया जायेगा.

§11§ अपील की सुनवाई - §1§ यदि अपीलीय प्राधिकारी अपील संक्षिप्ततः अस्वीकृत न करे, तो वह अपीलार्थी या उसके सम्यक् रूप से प्राधिकृत एजेंट की सुनवाई की तारीख निश्चित करेगा.

§2§ उपयुक्त प्राधिकारी, किसी भी अवस्था पर अपील की सुनवाई को किसी अन्य तारीख के लिए स्थगित कर सकेगा.

§3§ यदि सुनवाई के लिए निश्चित तारीख को या ऐसी किसी अन्य तारीख

को जिसके लिए सुनवाई स्थगित कर दी गई हो, अपीलार्थी उक्त प्राधिकारी के समक्ष या तो व्यक्तिगत रूप से या अपीलार्थी द्वारा सम्यक् रूप से प्राधिकृत एजेंट के जरिये उपस्थित न हो, तो उक्त प्राधिकारी अपील को खारिज कर सकेगा या उस पर एकरूप निर्णय कर सकेगा, जैसा भी वह उचित समझे.

§4§ जब उप-नियम §3§ के अधीन अपील खारिज की जाये या उस पर एकरूप निर्णय दिया जाये, तब अपीलार्थी ऐसे आदेश को सूचना की तारीख से ..... दिन के भीतर अपीली प्राधिकारी को अपील के पुनर्ग्रहण या पुनः सुनवाई के लिए आवेदन कर सकेगा और यदि अपीली प्राधिकारी का इस बात से समझधान हो जाये कि अपीलार्थी या सम्यक् रूप से प्राधिकृत एजेंट को उस समय जब अपील पर सुनवाई के लिए बुलाया गया था, उपस्थित होने से समुचित कारण से रोक दिया गया था, तो वह अपील को व्यय तथा पक्षों संबंधी निबंधनों सहित ऐसे निबंधनों पर, जैसा वह उचित समझे, पुनर्ग्रहण कर सकेगा या पुनः सुन सकेगा।

12. अपील में पारित आदेश की प्रति की पूर्ति - अपील में पारित आदेश की एक प्रति अपीलार्थी को निशुल्क दी जायेगी और उसकी दूसरी प्रति उस प्राधिकारी को भेजी जायेगी जिसका आदेश अपील का विषय रहा हो.

प्ररूप 'अ'

नियम 3 § 1 § देखिये §

उत्तराखण्ड राज्य होमोपैथिक रजिस्ट्रार

रजिस्ट्रीकरण क्रमिक	नाम तथा पिता/पति का नाम	पता	व्यक्ति का व्यवसाय का स्थान
1	2	3	4

आयु तथा जन्म वह धारा, जिसके अधीन अर्हताये तथा जिन्हें प्राप्त करने की तारीख	रजिस्ट्रीकरण किया गया तारीख और विश्वविद्यालय या स्थान	रजिस्ट्रीकरण की तारीख मण्डल आदि का नाम
5	6	7

धारा 22 की उपधारा § 2 § के अधीन किये गये	रजिस्ट्रार के हस्ताक्षर नवीनीकरण की तारीख तथा फीस	अभ्युक्ति
8	9	10

छत्तीसगढ़ होमियोपैथी परिषद अधिनियम, 2001 की धारा 22 की उपधारा §1 के अधीन रजिस्ट्रीकरण के आवेदन-पत्र का प्रारूप

प्रति,

रजिस्ट्रार  
राज्य होमियोपैथी परिषद  
छत्तीसगढ़, रायपुर

महोदय,

निवेदन है कि मेरा नाम छत्तीसगढ़ होमियोपैथी परिषद अधिनियम 2001 के अधीन रखे गये राज्य होमियोपैथी रजिस्ट्रार में प्रविष्ट किया जाये और मुझे रजिस्ट्रीकरण प्रमाण-पत्र प्रदान किया जाए, आवश्यक विधिष्ठियां नीचे दी गई है.

1. पूरा नाम § स्पष्ट अक्षरों में §  
§ विवाहित महिला के मामले में विवाह के पूर्व का भी नाम §
2. पिता/पति का नाम
3. निवास स्थान का पता  
§ मकान क्रमांक, मोहल्ला, हाकधर, नगर/ग्राम, जिला §
4. व्यवसायिक नियुक्ति, यदि कोई हो
5. व्यावसायिक पता/व्यवसाय का/के स्थान और प्रत्येक स्थान का व्यवसाय काल.
6. आयु तथा जन्म तारीख
7. §क§ अर्हता § अधिनियम के अधीन मान्य §  
§ख§ ऐसी अर्हता प्राप्त करने की तारीख  
§ग§ विश्वविद्यालय/मंडल/संस्था  
§घ§ ऐसे प्रशिक्षण का स्थान तथा अवधि

टिप्पणी :- कृपया, किसी मजिस्ट्रेट या किसी राषट्रिय अधिकारी द्वारा सम्यक् रूप से अभिप्रमाणित प्रमाण-पत्र या अर्हताओं के दस्तावेजों तथा मैट्रिक्यूलेशन/उ. मा. शा. प्रमाण-पत्र की सत्यप्रतियां लगाये.

100 रुपये की विहित फीस नगद /पोस्टल आर्डर/मनीआर्डर द्वारा प्रेषित की जाती है. देखिये रसीद क्रमांक..... दिनांक.....

मैं निष्ठापूर्वक घोषित करता हूँ कि उपर्युक्त सभी प्रविधिष्ठियां मेरे सर्वोत्तम ज्ञान एवं विश्वास के अनुसार सही है.

भवदीय,

स्थान .....

.....

तारीख .....

आवेदक के हस्ताक्षर

राज्य होमियोपैथी परिषद्, छत्तीसगढ़

रसीद क्रमांक  
तथा रसीद की तारीख

रजिस्ट्रार का आदेश

प्राप्तकर्ता अधिकारी के हस्ताक्षर रजिस्ट्रार के हस्ताक्षर

ग्राह्य "इ"

§नियम 6 §2§ देखिये§

छत्तीसगढ़ होमियोपैथी परिषद् अधिनियम, 2001 की धारा 22 की उपधारा §2§ के प्रथम परंतुक के अधीन राज्य होमियोपैथी रजिस्ट्रार में नाम पुनर्प्रविष्ट करने के लिए आवेदन-पत्र का ग्राह्य

प्रति,

रजिस्ट्रार

राज्य होमियोपैथी परिषद्, छत्तीसगढ़ रायपुर

महोदय,

निवेदन है कि मेरा नाम छत्तीसगढ़ होमियोपैथी परिषद् अधिनियम 2001 की धारा 22 की उपधारा §2§ के प्रथम परंतुक के अधीन राज्य होमियोपैथी रजिस्ट्रार में पुनर्प्रविष्ट किया जाय. मैं मध्य प्रदेश होमियोपैथी तथा बायो-केमिक प्रैक्टिशनिर्स एक्ट, 1976 के अधीन रजिस्ट्रीकृत व्यवसायी था. आवश्यक प्रविष्टियाँ नीचे दी गई है :-

1. मध्य प्रदेश होमियोपैथी तथा बायोकेमिक प्रैक्टिशनिर्स एक्ट, 1951 § अब निस्त § के अधीन रजिस्ट्रीकरण क्रमांक.
2. पूरा नाम § स्पष्ट अक्षरों में § § विवाहित महिला के मामले में विवाह से पूर्व का भी नाम §
3. पिता/पति को नाम
4. निवास-स्थान का पता § मकान क्रमांक, मुहल्ला, डाकघर, नगर, ग्राम, जिला आदि §
5. व्यवसायिक नियुक्ति, यदि कोई हो
6. व्यावसायिक पता/व्यवसाय का/के स्थान

- 7. आयु तथा जन्म तारीख .....
- 8. निरस्त अधिनियम की वह उपधारा तथा .....  
धारा, जिसके अधीन रजिस्ट्रीकृत हो.
- 9. क. अर्हता, यदि धारा 16 §1 § के .....  
अधीन रजिस्ट्रीकृत हो.
- ख. ऐसी अर्हता प्राप्त करने की तारीख .....
- ग. विश्वविद्यालय/मंडल/संस्था .....
- घ. ऐसे प्रशिक्षण का स्थान तथा अवधि .....

टिप्पणी :- कृपया किसी मजिस्ट्रेट या किसी राषत्रित अधिकारी द्वारा सम्यक् रूप से अभ्यमानित उपाधि या पत्रोपाधि के प्रमाण पत्र की सत्यप्रति लगायें §

..... रुपये की रकम § 50 रुपये की विहित फीस और प्रति माह 5 रुपये के हिसाब से ..... माह की ..... रु. की अतिरिक्त फीस § नकद/पोस्टल आर्डर/मनीआर्डर द्वारा प्रेषित की जाती है. देखिये रसीद क्रमांक ..... दिनांक .....

मैं निष्ठापूर्वक घोषित करता हूँ कि उपर्युक्त सभी प्रविष्टियाँ मेरे सर्वोत्तम ज्ञान एवं विश्वास के अनुसार सही है.

- सहपत्र 1.
- 2.
- 3.

स्थान .....  
दिनांक .....

भवदीय

.....  
§ आवेदक के हस्ताक्षर §

राज्य होमियोपैथी परिषद, छत्तीसगढ़  
रसीद क्रमांक .....

रसीद की तारीख .....

प्राप्तकर्ता लिपिक के हस्ताक्षर

रजिस्ट्रार का आदेश

.....  
रजिस्ट्रार के हस्ताक्षर